



ब्रह्मा भोजन

Collection of Avyakt Murli points on "Importance of Brahma Bhojan"



Writer: Brahma Kumaris, Mt Abu

Published by: **Shiv Baba Services Initiative**

Main Website: www.shivbabas.org | **BK Google:** www.bkgoogle.org

Get more PDF books: shivbabas.org/books

ब्रह्मा भोजन द्वारा आत्मशुद्धि
और परमात्मा अनुभूती



ब्रह्मा भोजन द्वारा आत्मशुद्धि
और
परमात्म अनुभूति

साकार और अव्यक्त वाणियों का संग्रह

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय
मुख्यालय : पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान



शिव बाबा ने साकार ब्रह्मा बाबा
द्वारा एवं अव्यक्त बापदादा ने दादी
हृदयमोहिनी जी के माध्यम से
ब्रह्मा-वत्सों को ब्रह्मा - भोजन प्रति
जो कल्याणकारी मधुर महावाक्य
उच्चारित किए, यह पुस्तिका
उसका एक संकलन है।

प्रस्तावना

वर्तमान परिवेश में भोजन की शुद्धता को लेकर अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, विशेषकर माताएं जो परिवार में अकेली ज्ञान में चलती हैं, कुमार-कुमारियाँ जो पढ़ाई और सर्विस करते हैं और ज्ञान में चलते हैं। देखा गया है जो ब्राह्मण आत्मा भोजन की धारणा को मजबूती से पालन किया है वह परिवार के अन्य सदस्य को भी परिवर्तन करने में सहभागी बने हैं।

सृष्टि के महापरिवर्तन के संधिकाल अर्थात् संगमयुग में मनुष्य को देवता बनाने का कार्य परमात्मा का ही है। निराकार ज्योति स्वरूप परमात्मा परकाया प्रवेश होकर ब्रह्मा मुख द्वारा श्रीमत देते हैं। इन सबमें एक प्रमुख श्रीमत है “जैसा अन्न, वैसा मन”। तो मानव को देव बनाने में महत्वपूर्ण योगदान भोजन का रहता है। हम सब जानते हैं कि मानव जीवन एवं अन्य प्राणियों के लिए भी सबसे आवश्यक जीवन निर्वाह हेतु वस्तु भोजन ही है। भोजन से भौतिक शरीर की रचना होती है। भोजन जीवन जीने के लिए कुदरत का अनमोल उपहार है। प्रकृति प्रदत्त इस शरीर को प्राकृतिक भोजन की ही आवश्यकता होती है। भोजन की सात्विकता विचारों की शुद्धता से ही आती है। आत्मा की तीन शक्तियाँ मन-बुद्धि-संस्कार में से मन आत्मा की एक प्रमुख शक्ति है। भोजन भी मन को प्रभावित करता है क्योंकि अन्न मनोवृत्ति के साथ साथ वातावरण, वायुमण्डल के वायुब्रेशन्स को भी ग्रहण करता है। जो वायुब्रेशन भोजन में होता है, खाने वाले के मन में उसी प्रकार का विचार उत्पन्न होने लगता है। राजयोगी जीवन के चार आधार स्तम्भ – शुद्ध अन्न, ब्रह्मचर्य, सत्संग, दैवीगुण हैं। सभी शास्त्रों के अनुसार अन्न की शुद्धता सबसे महत्वपूर्ण है और भगवानुवाच भी है कि बच्चे, बाप की याद में भोजन बनाओ, बाप को भोग लगाकर, बाप की याद

में खाओ तो मन में शुद्ध सात्विक विचार आयेंगे, बुद्धि में दिव्यता आ जायेगी, संस्कार श्रेष्ठ बन जायेंगे, जीवन में दिव्यगुणों का प्रादुर्भाव होगा। आत्मा शुद्ध एवं पवित्र बन जायेगी जिससे परमात्म अनुभूति सहज हो जायेगी।

परमात्मा शिव के ब्रह्मा मुख द्वारा उच्चारें हुए साकार महावाक्यों से संग्रहित, साथ ही अव्यक्त बापदादा (शिव बाबा एवं पिता श्री ब्रह्मा बाबा) के द्वारा दादी गुलजार जी के मुखार्विन्द से उच्चारित भोजन के प्रति महावाक्य एव संदेश का संकलन प्रस्तुत है।

ब्रह्मा भोजन जिसके लिए देवताएं भी तरसते हैं ऐसा भोजन हमें नसीब हुआ है। तो सोचें कितना बड़ा भाग्य है हमारा। वह भोजन कैसे बनायें जिससे हमारी कर्मेन्द्रियाँ शीतल बने, मन की चंचलता समाप्त हो, प्रभु में मन एकाग्र हो, इसकी पूरी विधि और सिद्धि ब्रह्मावत्सों के लिए प्रस्तुत है। भोजन प्रति धारणाओं को जितना मजबूत रखेंगे उतना ही स्थिति योगयुक्त शक्तिशाली बनेगी जिससे छोटी-बड़ी समस्याएं स्वतः समाप्त हो जायेंगी।

इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ
ईश्वरीय सेवा में,
बी. के. अशोक पंडित

भोजन बनाने समय पति, बच्चा याद पड़ता है तो शिवबाबा क्यों नहीं बाबा ने बहुत युक्तियाँ बताई हैं सिर्फ बाबा को याद करो, चार्ट रखो। भोजन बनाने समय भी याद करो। भोजन बनाने समय पति, बच्चा याद पड़ता है तो शिवबाबा क्यों नहीं पड़ सकता! यह तुम्हारा काम है। बाबा बुद्धि की सीढ़ी देते हैं फिर चढ़ो न चढ़ो, यह है तुम्हारा काम। जितना याद करेंगे उतनी सीढ़ी चढ़ते जायेंगे। नहीं तो इतना सुख नहीं मिलेगा।

08-01-2013

‘जैसा अन्न वैसा मन हो जायेगा’

अखबार में डालते हैं फलाना स्वर्गवासी हुआ। उनसे पूछना चाहिए स्वर्ग किसको कहते हो? यह तो नर्क है, तो पुनर्जन्म भी नर्क में लेंगे। स्वर्ग है तो पुनर्जन्म भी स्वर्ग में लेंगे। अगर कोई शरीर छोड़ नर्क से स्वर्ग गया, वहाँ तो उनको बहुत वैभव मिलेंगे। फिर नर्क के वैभव खिलाने उनको स्वर्ग से नर्क में क्यों बुलाते हो? उनको नर्क का भोजन खिलायेंगे तो ऐसी बुद्धि हो जायेगी। जैसा अन्न वैसा मन हो जायेगा। स्वर्ग में तो दूध-घी की नदियां बहती हैं। तुम तो घासलेट का खाना खिलायेंगे। श्रीनाथ द्वारे में अच्छे घी का भोग लगता है क्योंकि वहाँ राधे-कृष्ण का चित्र है। तो उन्हीं की याद में भोग भी अच्छे-अच्छे वैभव बनाकर लगाते हैं। ऐसा भोग और कहाँ नहीं लगता। जगत नाथ का भी मन्दिर है, वहाँ चावल का भोग लगाते हैं, वहाँ वैभव नहीं चढ़ाते। अब तो नर्क है तो दुःख है। स्वर्ग में तो सुख था। बाप समझाते तो बहुत अच्छा हैं। परन्तु धारणा नम्बरवार होती है यह भी ड्रामा में नूध है। ड्रामा अनुसार नौकर चाकर भी बनने हैं। थर्ड क्लास टिकेट भी कोई तो जरूर लेंगे ना। फर्स्टक्लास है सूर्यवंशी राजधानी, सेकेण्ड क्लास चन्द्रवंशी राजधानी, थर्डक्लास है प्रजा। उनमें नम्बरवार हैं। अब जिसको जो टिकेट चाहिए वह लेवे।

01-03-2013

जरूर ऊंच बाप, चीज़ भी ऊंची देते होंगे

पहले-पहले जब आत्मा नीचे आती है तो उनको सुख भोगना है। दुःख भोग न सके। मनुष्य पहचान नहीं सकते कि यह नया सोल है इसलिए इतना सुख है, मान है। अब सबकी तमोप्रधान अवस्था है। तत्व, खानियां आदि सब तमोप्रधान हैं। नई चीज़ें थी, अब पुरानी हो गई हैं। वहाँ का अनाज फल फूल आदि कैसे अच्छे होते हैं, वह भी बच्चों को साक्षात्कार कराया हुआ है। सूक्ष्मवतन में बच्चियां जाती हैं, कहती हैं बाबा ने शूबीरस पिलाया। जरूर ऊंच बाप, चीज़ भी ऊंची देते होंगे। बच्चों की बुद्धि में रहना चाहिए – ऊंच ते ऊंच एक भगवान ही है। याद भी सब उनको करते हैं।

08-03-2013

फल लेकर शिवबाबा को याद कर खायेंगे तो पवित्र बन जायेगा

बाबा युक्तियां बताते रहते हैं। बच्ची अगर ज्ञान नहीं लेती है तो उनको शादी करानी पड़े। बच्चा अगर ज्ञान न लेवे तो कहेंगे जाकर अपना कमाओ और शादी करो। बाबा राय तो हर बात की देते हैं। शादी पर जाना है तो सिर्फ फल लेकर शिवबाबा को याद कर खायेंगे तो वह पवित्र बन जायेगा।

09-03-2013

यह शिवबाबा का भण्डारा है

बाबा कहते हैं मेरा बन और सबसे ममत्व मिटा दो। बाकी ऐसे नहीं कि यहाँ आकर बैठ जाना है। तुमको अपना धन्धा धोरी करना है। घर सम्भालना है। बच्चों का कर्जा उतारना है। मात-पिता की सेवा कर उनका उजूरा उतार देना है। बच्चों पर माँ बाप की पालना का कर्जा चढ़ता है। अब यह बाप तुम्हारी

पालना कर रहे हैं तो तुमसे पहले ही सरेन्डर कराते हैं। सब कुछ दे दो। उनसे फिर तुम्हारी पालना भी होती है। यह शिवबाबा का भण्डारा है। मात-पिता तुम बच्चों की पालना कर रहे हैं। शुरू में जो भी आये थे सभी ने झट सरेन्डर कर दिया। अपने पास कुछ नहीं रखा। सरेन्डर किया फिर उस धन से बिगर छुट्टी पैसा आदि किसी को दे न सके। जैसे शास्त्रों में हरिश्चन्द्र की कहानी है। परन्तु यथार्थ तो कुछ है नहीं। भारत बिल्कुल पवित्र था। भारतवासियों जैसा पवित्र सुखी कोई होता नहीं।

27-04-2013

हम देवता बन रहे हैं तो कोई अशुद्ध वस्तु खा नहीं सकते हैं

इसमें परहेज बहुत चाहिए। हम देवता बन रहे हैं तो कोई अशुद्ध वस्तु खा नहीं सकते हैं। कोई समझते हैं मछली खाने में पाप नहीं है, ब्राह्मणों को भी खिलाते हैं। सब रस्म-रिवाज ही उल्टा हो गया है। बाप कहते हैं बिल्कुल पवित्र बनना है।

24-05-2013

बाप (शिवबाबा) कहते हैं घर में रहकर ऐसा समझो सब बाबा का है

तुम अब किसकी परवरिश के नीचे हो? शिवबाबा की, क्योंकि तुम्हारे पास जो कुछ भी है वह शिवबाबा को अर्पण किया है। तुम्हारी परवरिश जैसे कि शिवबाबा के भण्डारे से होती है। तुमने अपना सब कुछ शिवबाबा को दान किया है। अब उनसे ही तुम पलते हो। कितना पवित्र अन्न मिलता है। ऐसे कभी होता नहीं जो कोई धर्म (दान) करे उससे ही उनकी परवरिश हो। वह तो जिसको दान करते वह खा जाता है। यहाँ तो तुम शिवबाबा को देते हो तो कितना पवित्र बन जाता है! इससे तुम्हारी ही परवरिश होती है। बाप कहते हैं घर में रहकर ऐसा समझो सब बाबा का है। ऐसे समझ खाते हो तो हू-ब-हू तुम शिव के भण्डारे से खाते हो। इसमें कोई ममत्व नहीं। बाप का समझते हो। बाप

का दिया हुआ है। बाप को अर्पण किया हुआ है। इसमें कोई ममत्व नहीं। उनके हुक्म से खा रहे हैं। भल बैठा घर में है परन्तु शिव के भण्डारे से खाते हैं। कहते हो ना तुम्हीं से खाऊं ... तुम्हीं से घूमूं। बाबा —बाबा कहने से उनसे योग लगा रहेगा। एवरहेल्दी बन जायेंगे। यह है हेल्दी बनने की सेनेटोरियम।

03-06-2013

हे माता, तुम शिवबाबा के भण्डारे से सबकी पालना करती हो

हे माता, तुम शिवबाबा के भण्डारे से सबकी पालना करती हो। तुमको शिवबाबा के भण्डारे से ज्ञान रत्नों का खजाना मिलता है अथवा ज्ञान अमृत के कलष से तुम्हारी पालना होती है। वास्तव में महिमा शिवबाबा की है, वह करनकरावनहार है। माता है जगदम्बा। जरूर और भी मातायें होंगी, जो यह माताओं की महिमा है। माता बहुत-बहुत अच्छी पालना करती है। शिवबाबा के यज्ञ में जो रहने वाले हैं उन्हीं की स्थूल में भी पालना होती है और अविनाशी ज्ञान रत्नों से तो सभी की पालना करते हैं। ऐसे नहीं, सिर्फ बहन भाई की पालना करती है। दोनों ज्ञान रत्नों की लेन-देन से एक-दो की पालना करते हैं—भाई बहन की, बहन भाई की। बच्चों को बहुत प्यार से रहना है। 04-07-2013

पित्र को यानी आत्मा को खिलाया जाता है

बाप तो अपने घर में ही रहता है, और कहाँ रहेगा? अब बाप इस बेहद के घर में आया हुआ है। यहाँ विराजमान है। कहते हैं कि मैंने इसमें प्रवेश किया है। जैसे ब्राह्मणों में पित्रों को बुलाते हैं। समझो, कोई अपने बाप के पित्र को खिलाते हैं तो आत्मा कहेगी कि मैं इनमें आया हुआ हूँ। मैंने इसमें प्रवेश किया हुआ है, कुछ पूछना हो तो पूछो, आगे पित्रों को बुलाने का बहुत रिवाज था। पित्र तो आत्मा है ना। पित्र को यानी आत्मा को खिलाया जाता है। कहेंगे आज हमारे दादे का पित्र है, आज फलाने का पित्र है। तो आत्मा को बुलाया जाता है,

खिलाया जाता है। समझो किसका स्त्री से प्यार है, शरीर छोड़ दिया तो उसकी आत्मा को बुलाते हैं। कहते हैं हमने हीरे की फुल्ली पहनाने का वायदा किया था, तो ब्राह्मण को बुलाकर उनको हीरे की फुल्ली पहनाते हैं। बुलाया तो आत्मा को। शरीर थोड़े ही आयेगा। यह रस्म भारत में ही है। जैसे तुम सूक्ष्मवतन में जाते हो, कोई मर गया, उनका भोग लगाते हो तो सूक्ष्मवतन में वह आत्मा आती है। यह है बिल्कुल नई बातें। जब तक कोई अच्छी रीति समझ न जाये तब तक मनुष्यों को संशय पड़ता है कि यह क्या करते हैं? ब्राह्मणों की रस्म-रिवाज देखो कैसी है! सभी मन्दिरों आदि में भोग लगाते हैं। पित्र को भोग लगाते हैं। गुरुनानक की आत्मा को भोग लगाया, अब वह कहाँ है? यह समझ नहीं सकते। तुम तो जानते हो जिन्होंने धर्म स्थापन किया हुआ है, वह सब यहाँ हैं।

03-08-2013

कोशिश करनी चाहिए कि सारा समय बाप की याद में खायें

बाप कहते हैं निरन्तर याद करना मासी का घर नहीं है। भोजन करते समय कितनी कोशिश करते हैं फिर भी भूल जाते हैं। बहुत कोशिश करते हैं – सारा समय बाप की याद में खायें क्योंकि वह हमारा बहुत प्यारा है, क्यों न हम उनको याद कर खायें तो साथ में रहेगा। फिर भी घड़ी-घड़ी याद भूल जाती है। भक्ति मार्ग में भी बुद्धि और-और तरफ भटकती रहती है। यह तो है ज्ञान की बात।

23-08-2013

कोई कर्म का सन्यास हो नहीं सकता

वह समझते हैं हम भोजन अपने हाथ से नहीं पकाते हैं इसलिए कर्म सन्यासी नाम है। परन्तु कर्म का सन्यास तो हो नहीं सकता। उनका तो धर्म ही ऐसा है। गृहस्थियों के पास उनको खाना पड़ता है इसलिए फिर गृहस्थियों के पास जन्म

ले निवृत्ति मार्ग में जाना है क्योंकि भारत को पवित्र बनाना है। भारत में ही प्योरिटी थी। सब प्योर थे।

26-08-2013

वहाँ (स्वर्ग) 36 प्रकार के वैभव बनते हैं

कहते हैं तुम कितने मस्त थे। सतयुग-त्रेता में बेपरवाह बादशाह थे। कितने वैभव थे! श्रीनाथ द्वारे में कितने वैभव खिलाते हैं, पक्की रसोई बनाते हैं, जगन्नाथ के मन्दिर में दाल-चावल बनाते हैं। वहाँ काले चित्र दिखाते हैं। अभी तुम सब काले हो। श्रीनाथ द्वारे में बहुत फर्स्टक्लास चीजें बनती हैं, फिर जो श्रीनाथ को भोग लगाते हैं, वह पुजारियों को मिलता है। वह फिर दुकान में बेचते हैं। उससे शरीर निर्वाह होता है। तुम बच्चे तो स्वर्ग के मालिक बनते हो। वहाँ जो वैभव तुम खाते हो, वह दास-दासियां भी खाते हैं। 36 प्रकार के वैभव बनते हैं, इतने तो खा नहीं सकेंगे तो फिर दास-दासियां खाते हैं। परन्तु इसमें ही खुश नहीं होना है। राजधानी तो सारी बननी है। तुम वहाँ बहुत मौज में रहेंगे। वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी का स्थापन किया हुआ स्वर्ग का राज्य-भाग्य तुम बच्चों को मिलता है।

30-08-2013

पहले खिलाने वाले को खिलाकर फिर खाना है

यह भी बच्चों को समझाया गया है कि पहले खिलाने वाले को खिलाकर फिर खाना है। शिवबाबा के यज्ञ से खाते हैं तो पहले उनको भोग लगाना पड़े। यह सब सूक्ष्मवतन में साक्षात्कार होते हैं। ड्रामा में नूध हैं। तुमको भोग लगाना है शिवबाबा को। वह तो निराकार है। गाया भी जाता है देवताओं के लिए – उनको ब्रह्मा भोजन की आश थी क्योंकि तुम ब्रह्मा भोजन खाकर ब्राह्मण से देवता बनते हो। सूक्ष्मवतन में देवतायें आते हैं, महफ़िल लगती है, यह सब खेल-पाल है।

31-08-2013

शिवबाबा को याद कर भोजन बनायेंगे तो ताकत भर जायेगी

समझो, कोई मशीन चलाते हैं अथवा मक्खन निकालते हैं तो शिवबाबा को याद कर मशीन चलाते हैं? शिवबाबा की याद में बाबा के यज्ञ के लिए मक्खन निकाल रहा हूँ। कितनी खुशी की बात है। यज्ञ के लिए भोजन बनाता हूँ। खुशी होती है ना। परन्तु फिर घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं फिर पुरुषार्थ करना पड़े खुद का। एक-दो को याद कराने का पुरुषार्थ कराने वाला चाहिए। फिर भी शिवबाबा को याद कर भोजन बनायेंगे तो ताकत भर जायेगी। तुम्हारी अवस्था बहुत अच्छी हो जाए परन्तु ऐसे होता नहीं है। ब्रह्मा भोजन की तो बहुत महिमा है, परन्तु जब आत्मा शिवबाबा की याद में रह बनाये। शक्तियों का ऐसा भण्डारा हो। याद में रह भोजन बनायें तब तो शक्ति मिले। वह भी शक्तियों की बुद्धि में नहीं आता है। नहीं तो पुरुषार्थ करें। बाबा को तो दिल होती है अपने हाथ से शिवबाबा को याद करते भोजन बनाऊँ। प्रैक्टिस करनी है। देखें, याद ठहर सकती है? बाबा चैलेन्ज देते हैं जो भी भण्डारे में हैं, कोशिश करो। बाबा जानते हैं कि एक घण्टा भी याद नहीं कर सकते। याद वाले ज्ञानवान हों तो डबल सर्विस में लग जाएं। जब तक कांटे को फूल न बनायें तो कुछ काम के नहीं हैं।

05-09-2013

कहते हैं ना – ‘जिन सोया तिन खोया’

बाबा से अगर कोई पूछे तो बाबा झट बता देंगे। बाप तो सब-कुछ जानते हैं और सिद्ध कर बतलाते हैं कि इस कारण तुम यह बनेंगे। भल सरेन्डर किया है, उसका भी हिसाब-किताब है। सरेन्डर किया है परन्तु कुछ सर्विस नहीं करते, सिर्फ खाते-पीते रहते, तो जो दिया वह खाकर खत्म करते हैं। दिया सो खाया, सर्विस नहीं की तो थर्ड क्लास दास-दासी जाकर बनेंगे। हाँ, सर्विस करते हैं और खाते हैं तो ठीक है। धंधा कुछ नहीं करते तो खा-खा कर खत्म कर देते हैं फिर और बोझा चढ़ जाता है। यहाँ रहते हैं जो दिया सो खाया। जो भल नहीं

देते हैं परन्तु सर्विस बहुत करते हैं तो वह ऊंच पद पा लेते हैं। मम्मा ने धन कुछ नहीं दिया, परन्तु पद बहुत ऊंच पाती है क्योंकि बाबा की रूहानी सर्विस करती है। हिसाब है ना। कइयों को नशा रहता है हमने तो सब कुछ दिया है, सरेन्डर हुए हैं। परन्तु खाते भी तो हैं ना। बाबा मिसाल तो सब बताते हैं। सर्विस नहीं की खाया और खलास किया। कहते हैं ना – जिन सोया तिन खोया। 8 घण्टा सर्विस करने बिगर खाना हराम है। खाते रहेंगे तो जमा कुछ नहीं होगा फिर सर्विस करनी पड़ेगी। बाप को तो सब बतलाना पड़ता है ना, जो कोई ऐसे नहीं कहे कि हमको बतलाया क्यों नहीं? बाबा ने सब-कुछ दिया और फिर सर्विस भी करते रहते हैं, तो ऊंच पद भी है। सरेन्डर हुए और बैठ खाया, सर्विस नहीं की तो क्या बनेगा? श्रीमत पर चलते नहीं। बाबा खास समझा रहे हैं। ऐसे नहीं कि पिछाड़ी को कहे कि हमारा पद ऐसा क्यों हुआ? तो बाप समझाते हैं सर्विस न करना, मुफ्त में खाना, उसका नतीजा कल्प-कल्यान्तर का यह हो जायेगा इसलिए बाबा सावधान करते हैं। समझना चाहिए कल्प-कल्यान्तर के लिए हमारा पद भ्रष्ट हो जायेगा। बाबा को रहम पड़ता है इसलिए हर बात की रोशनी देते हैं। सर्विस नहीं करेंगे तो ऊंच पद नहीं पा सकेंगे। जो गृहस्थ व्यवहार में रहते सर्विस करते हैं, उनका पद बहुत ऊंच है।

03-10-2013

भोजन याद में रहकर खाना है

बाबा ने समझाया है – शिवबाबा को याद करो, नहीं तो पाप हो जायेगा। निरन्तर बाप को याद करना है, नहीं तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। बड़ी मंजिल है। मासी का घर थोड़े ही है। ऐसे नहीं, भोजन पर पहले याद किया फिर खलास, ऐसे ही भोजन खाने लग पड़े। नहीं, सारा समय याद करना पड़े। मेहनत है। ऐसे थोड़ेही ऊंच पद मिल सकता है।

15-10-2013

मैं नहीं खाता हूँ, शरीर को खिलाता हूँ

यह ब्रह्मा कहेंगे ना – बाबा से हमें वर्सा मिलता है। बाबा ने हमारा रथ लोन लिया है। अब बाबा तो इस रथ की ख़ातिरी करेंगे। पहले तो समझता था – मैं आत्मा इस रथ को खिलाता हूँ। यह भी रथ है ना। अब कहेंगे इनको वही खिलायेंगे, कभी पीठ पर हाथ फेरेंगे। बहुत ख़ातिरी करते हैं क्योंकि उन पर सवारी करते हैं। बाबा इस रथ पर सवारी करते हैं तो क्या बाबा ख़ातिरी नहीं करते होंगे? बाबा कहते हैं मैं तुम्हारे शरीर को स्नान कराता हूँ, खिलाता हूँ। मैं नहीं खाता हूँ, शरीर को खिलाता हूँ। बाबा खिलाते हैं, खाते नहीं हैं।

01-11-2013

सबके लिए एक बात नहीं हो सकती

सबके लिए एक बात नहीं हो सकती। ऐसे नहीं बाबा कहते हैं दृष्टि देकर खाओ तो बस, परन्तु बाबा कहते हैं लाचारी हालत में और कुछ नहीं कर सकते तो दृष्टि देकर खाओ। बाकी सबके लिए थोड़ेही बाबा कहेंगे। जैसे बाबा कोई को कहते हैं बाइसकोप में भले जाओ। परन्तु यह सबके लिए नहीं है। कोई के साथ जाना पड़ता है तो उन्हें भी नॉलेज देनी है। वह हद का नाटक है, यह बेहद का नाटक है। तो सर्विस करनी पड़े। ऐसे नहीं सिर्फ देखने के लिए जाना है।

02-12-2013

भक्ति मार्ग और ज्ञान मार्ग का कान्ट्रास्ट

मनुष्य पावन दुनिया स्वर्ग को याद भी करते हैं। कोई मरता है तो कहेंगे फलाना स्वर्गवासी हुआ। वहाँ तो बहुत मालठाल होते हैं, वहाँ से फिर यहाँ बुलाकर खिलाते क्यों हो? तुम श्रीनाथ के मन्दिर में देखेंगे – कितने माल बनते हैं। अब श्रीनाथ पुरी और जगन्नाथ पुरी, वास्तव में है एक ही बात परन्तु वहाँ श्रीनाथ द्वारे में देखेंगे तो बहुत वैभव बनते हैं और जगन्नाथ पुरी में सिर्फ फीके चावल का भोग लगता है। घी आदि कुछ नहीं पड़ता। यह फ़र्क बताते हैं – गोरा है तो

ऐसे माल और सांवरा है तो यह सूखा चावल। राज बड़ा अच्छा है। यह बाप बैठ समझाते हैं। श्रीनाथ द्वारे में इतना भोग लगाते हैं तो फिर पुजारी लोग दुकान में बेचते भी हैं। उन्हों की कमाई का आधार भी उस पर है। मिलता मुफ्त में है फिर कमाते हैं। तो देखो कितनी अन्धश्रद्धा की बातें हैं। यह है भक्ति मार्ग। ज्ञान मार्ग सद्गति मार्ग है, गंगा स्नान से थोड़ेही सद्गति होती है। बड़ा युक्ति से समझाना है। जैसे चूहा फूंक देकर काटता है। बड़ी ही सयानापन चाहिए समझने और फिर समझाने की। कितनी नाजुक बातें हैं।

14-12-2013

इस समय तुम्हें और सब आशायें छोड़ देनी चाहिए

समझते हो यह शरीर जहाँ तक रहेगा वहाँ तक यात्रा चालू है। कर्म भी तो करना है। भल खाओ, पियो, खाना पकाओ। जितना समय मिले बाप को जरूर याद करना है। दफ्तर में बैठते हो, देखो फुर्सत है तो बाबा की याद में बैठ जाओ। बहुत कमाई है। ट्रेन में सफर करते हो, उस समय तो कोई काम नहीं रहता है। बैठे हुए बाबा को याद करते रहो। अभी हम बाबा के पास जाते हैं। बाबा परमधाम से हमको लेने लिए आया है। अच्छा, शाम को घर का खाना आदि पकाते हो तो भी एक-दो को याद दिलाओ—आओ, हम अपने बाप की याद में बैठें।

बाबा को याद करने से तुम बाबा के पास चले जायेंगे तुम बच्चियाँ कितने व्रत-नेम आदि रखती थीं! 7 रोज़ निर्जल रहती थीं, कितनी मेहनत करती थीं! परन्तु कृष्णपुरी में जा न सकें। अभी तुम कृष्णपुरी स्वर्ग में प्रैक्टिकल में जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। कृष्ण को द्वापर में ले जाने से स्वर्ग का किसको पता नहीं पड़ता है। वास्तव में 7 रोज़ का अर्थ क्या है, सो तुम अभी जानते हो। सिवाए बाप के और कोई को याद नहीं करना है। बाकी निर्जल आदि की कोई बात नहीं। बाबा को याद करने से तुम बाबा के पास चले जायेंगे। बाप फिर स्वर्ग में भेज देंगे। व्रत-नेम रख तुम कितने दिन भूख मरते हो! जन्म बाई जन्म कितनी

मेहनत करते हो! प्राप्ति कुछ भी नहीं हुई है। अभी तुमको उनसे छुड़ाए सद्गति मार्ग में ले जाते हैं।

भल तुम अपना धन्धाधोरी आदि करते रहो। फिर भी बाबा राय देते रहेंगे। देखेंगे—यह बहुत धन्धे में घुस पड़े हैं तो राय देंगे। क्यों इतना माथा मारते हो? कितना समय तुम जियेंगे। पेट तो एक-दो रोटी मांगता है। उनसे गरीब भी चलते तो साहूकार भी चलते हैं। साहूकार लोग अच्छी रीति खाते हैं फिर रोगी भी बनते हैं। भील लोग देखो कितने मजबूत रहते हैं! और खाते क्या हैं! कितना काम करते हैं! अपनी कुटिया में वह खुश रहते हैं। तो इस समय तुम्हें और सब आशायें छोड़ देनी चाहिए। दो रोटी मिली, पेट भरा, बस, बाप को याद करना है।

20-12-2013

बाबा को योगी और ज्ञानी बच्चे सबसे प्यारे हैं

बाबा कहते हैं मुझे योगी और ज्ञानी सबसे प्यारा है। योग में रहकर भोजन बनाये, खिलाये तो बहुत उन्नति हो सकती है। यह शिवबाबा का भण्डारा है। तो शिवबाबा के बच्चे जरूर ऐसे योगयुक्त होंगे। धीरे-धीरे अवस्था ऊंच होती है। टाइम जरूर लगता है। हरेक का कर्मबन्धन अपना-अपना है। 28-12-2013

अगर झूठ बोलेंगे तो धर्मराज की कड़ी सजा भोगनी पड़ेगी

बाबा कहते हैं बहुत परहेज रखनी है। यहाँ ऐसा तो कोई नहीं होगा जो शराब पीता होगा? बाप बच्चों से पूछते हैं। अगर झूठ बोलेंगे तो धर्मराज की कड़ी सजा भोगनी पड़ेगी। भगवान् के आगे सच बोलना है। कोई जरा भी शराब किसी कारण से अथवा दवाई रीति से पीते हैं? कोई ने हाथ नहीं उठाया। यहाँ सच जरूर बोलना है। कोई भी भूल होती है तो फिर से लिखना चाहिए—बाबा, मेरे से यह भूल हुई, माया ने थप्पड़ मार दिया।

31-12-2013

जो यज्ञ से मिले, उसमें खुश रहना है

जो यज्ञ से मिले, उसमें खुश रहना है। यज्ञ के भोजन से तो बहुत लव चाहिए। सन्यासी थाली धोकर पीते हैं क्योंकि उनको भोजन का महत्व है। समय ऐसा आना है जो अनाज भी न मिले। तो सब कुछ सहन करना पड़ता है, तब पास हो सकेंगे।

04-03-2014

घर में भी ट्रस्टी होकर रहते हो तो शिवबाबा के भण्डारे से खाते हो

इसमें बड़े सयाने बच्चे चाहिए। फिर तुम घर में भोजन बनाकर खाते हो गोया यज्ञ से खाते हो क्योंकि तुम भी यज्ञ के हुए। सब-कुछ यज्ञ का हो गया। घर में भी ट्रस्टी होकर रहते हो तो शिवबाबा के भण्डारे से खाते हो। परन्तु पूरा निश्चय चाहिए। निश्चय में गड़बड़ हुई तो.... हरिश्चन्द्र का मिसाल देते हैं। बाबा को तो सब कुछ बताना है। मैं गरीब निवाज़ हूँ।

05-03-2014

बच्चे तो भोजन से भी रिफ्रेश होते हैं

बाप के पास जो माल है वह मिलता रहेगा—ड्रामा अनुसार। यह बच्चों की बुद्धि में चलना चाहिए। भल कुछ काम काज करो, हाथ से भोजन बनाओ, बुद्धि शिवबाबा के पास हो। ब्रह्मा भोजन भी पवित्र चाहिए। ब्रह्मा भोजन सो ब्राह्मणों का भोजन। ब्राह्मण जितना योग में रह बनाते हैं, उतनी उस भोजन में ताकत आती है। गायन है कि देवतायें भी ब्रह्मा भोजन की बहुत महिमा करते हैं, जिससे हृदय शुद्ध होता है तो ब्राह्मण भी ऐसे होने चाहिए। अभी नहीं हैं अभी अगर ऐसे बन जाएं तो तुम्हारी बहुत वृद्धि हो जाए। परन्तु ड्रामा अनुसार धीरे-

धीरे वृद्धि को पाना है। ऐसा भी ब्राह्मण निकलेगा जो कहेगा हम बाबा की याद में रह भोजन बनाते हैं। बाबा चैलेन्ज देते हैं ना। ऐसा ब्राह्मण हो जो योग में रह भोजन बनाये। भोजन पवित्र होना चाहिए। भोजन पर बहुत मदार है। बाहर में बच्चों को नहीं मिलता है इसलिए यहाँ आते हैं। बच्चे तो भोजन से भी रिफ्रेश होते हैं। योग वाले फिर ज्ञानी भी होते हैं इसलिए उन्हों को सर्विस पर भी भेज देते हैं। बहुत हो जायेंगे तो फिर यहाँ भी ऐसे ब्राह्मणों को रख देंगे। नहीं तो महारथियों में से भोजन पर भी होने चाहिए, जो योगयुक्त खाना बने। देवतायें भी समझते हैं हम भी ब्रह्मा भोजन खाकर देवता बने हैं। तो रुचि से तुम्हारे साथ मिलने के लिए आते हैं। कैसे तुमसे मिलते हैं, यह भी ड्रामा में युक्ति है। सूक्ष्मवतन में वह और यह मिलते हैं। यह भी वन्डरफुल साक्षात्कार है। वन्डरफुल नॉलेज है ना। तो साक्षात्कार भी वन्डरफुल है—अर्थ सहित।

03-05-2014

भोजन शुद्ध खाना है

मुख्य हर बात में आंखें ही धोखा देती हैं, इसलिए शरीर को न देखो। हमारी बुद्धि शान्तिधाम-सुखधाम में लटकी हुई है और दैवी गुण भी धारण करने हैं। भोजन भी शुद्ध खाना है। देवताओं का पवित्र भोजन है। वैष्णव अक्षर विष्णु से निकला है। देवता कभी गन्दी चीज़ थोड़ेही खाते होंगे।

11-06-2014

शिवबाबा की याद में बनाये हुए भोजन से हृदय पिघल जाता है

तुम बच्चियों को तो बहुत टाइम निकालना चाहिए। तुम भोजन आदि बनाती हो तो बहुत शुद्ध भोजन याद में बैठ बनाना चाहिए, जो किसको खिलायें तो उनका

भी हृदय शुद्ध हो जाये। ऐसे बहुत थोड़े हैं, जिनको ऐसा भोजन मिलता होगा। अपने से पूछो—हम शिवबाबा की याद में रहकर भोजन बनाते हैं, जो खाने से ही उनके हृदय पिघल जायें।

21-06-2014

भल नौकरी आदि करो, भोजन बनाओ तो भी याद में रहकर

भल नौकरी आदि करो, भोजन बनाओ तो भी याद में रहकर, तो भोजन भी शुद्ध होगा इसलिए गाया जाता है ब्रह्मा भोजन के लिए देवताओं को भी दिल होती है। यह बच्चियाँ भी भोग लेकर जाती हैं। तो वहाँ महफिल होती है। ब्राह्मणों और देवताओं का मेला लगता है। भोजन स्वीकार करने आते हैं। ब्राह्मण लोग जब भोजन पान करते हैं तो भी मन्त्र जपते हैं। ब्रह्मा भोजन की बहुत महिमा है।

30-08-2014

कार्य साधारण और स्थिति अति श्रेष्ठ

कर्म भल बहुत साधारण हो लेकिन स्थिति ऐसी महान हो जो साधारण काम होते हुए भी साक्षात्कार मूर्त दिखाई दें। कोई भी स्थूल कार्य धोबीघाट या सफाई आदि का कर रहे हैं, भण्डारे का कार्य कर रहे हैं लेकिन स्थिति ऐसी महान हो। ऐसा भी समय प्रैक्टिकल में आयेगा जो देखने वाले यही वर्णन करेंगे कि इतनी महान आत्मायें फरिश्ता रूप और कार्य क्या कर रही हैं! कार्य साधारण और स्थिति अति श्रेष्ठ। जैसे सतयुगी शहजादियों की आत्मायें जब आती थीं तो वह भविष्य के रूप प्रैक्टिकल में देखते हुए आश्चर्य खाती थीं ना कि इतने बड़े महाराजे और कार्य क्या कर रहे हैं। विश्व महाराजा और भोजन बना रहे हैं। वैसे ही आने वाली आत्मायें यह वर्णन करेंगी कि हमारे इतने श्रेष्ठ पूज्य इष्ट

देव और यह कार्य कर रहे हैं? चलते-फिरते ईष्टदेव या देवी का साक्षात्कार स्पष्ट दिखाई दे। अन्त में पूज्य स्वरूप प्रत्यक्ष देखने लगेंगे, फरिश्ता रूप प्रत्यक्ष दिखाई देने लगेगा।

31-08-2014

याद में रहकर बनायेंगे तो खाने वालों को भी ताकत मिलेगी

बाप समझाते हैं खाना बनाओ, मिठाई बनाओ, शिवबाबा को याद करते रहो। शिवबाबा को याद कर बनायेंगे तो मिठाई खाने वाले का भी कल्याण होगा। कहाँ साक्षात्कार भी हो सकता है। ब्रह्मा का भी साक्षात्कार हो सकता है। शुद्ध अन्न पड़ता है तो ब्रह्मा का, कृष्ण का, शिव का साक्षात्कार कर सकते हैं। ब्रह्मा है यहाँ। ब्रह्माकुमार-कुमारियों का नाम तो होता है ना। बहुतों को साक्षात्कार होते रहेंगे क्योंकि बाप को याद करते हो ना। बाप युक्तियाँ तो बहुत ही बताते हैं। वह मुख से राम-राम बोलते हैं, तुमको मुख से कुछ बोलना नहीं है। जैसे वह लोग समझते हैं गुरुनानक को भोग लगा रहे हैं, तुम भी समझते हो हम शिवबाबा को भोग लगाने के लिए बनाते हैं। शिवबाबा को याद करते बनायेंगे तो बहुतों का कल्याण हो सकता है। उस भोजन में ताकत हो जाती है इसलिए बाबा भोजन बनाने वालों को भी कहते हैं शिवबाबा को याद कर बनाते हो? लिखा हुआ भी है शिवबाबा याद है? याद में रहकर बनायेंगे तो खाने वालों को भी ताकत मिलेगी, हृदय शुद्ध होगा। ब्रह्मा भोजन का गायन भी है ना। ब्राह्मणों का बनाया हुआ भोजन देवतायें भी पसन्द करते हैं। यह भी शास्त्रों में है। ब्राह्मणों का भोजन बनाया हुआ खाने से बुद्धि शुद्ध हो जाती है, ताकत रहती है। ब्रह्मा भोजन की बहुत महिमा है। ब्रह्मा भोजन का जिनको कदर रहता है, थाली धोकर भी पी लेते हैं। बहुत ऊँच समझते हैं। भोजन बिगर तो रह न सके। फैमन

में भोजन बिगर मर जाते हैं। आत्मा ही भोजन खाती है, इन आरगन्स द्वारा स्वाद वह लेती है, अच्छा-बुरा आत्मा ने कहा ना। यह बहुत स्वादिष्ट है, ताकत वाला है। आगे चल जैसे तुम उन्नति को पाते रहेंगे वैसे भोजन भी तुमको ऐसा मिलता रहेगा, इसलिए बच्चों को कहते हैं शिवबाबा को याद कर भोजन बनाओ। बाप जो समझाते हैं उसको अमल में लाना चाहिए ना। तुम हो पियरघर वाले, जाते हो ससुरघर। सूक्ष्मवतन में भी आपस में मिलते हैं। भोग ले जाते हैं। देवताओं को भोग लगाते हैं ना। देवतायें आते हैं तुम ब्राह्मण वहाँ जाते हो। वहाँ महफ़िल लगती है।

03-10-2014

कहते हो बाबा तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से खाऊँ

बाबा कहते हैं तुमको कोई तकलीफ नहीं करनी है। सिर्फ एक साजन को याद करना है। तुम सभी सजिनियाँ हो तो साजन को याद करना पड़े। **उस साजन को भोग लगाने के बिना खाने में लज्जा नहीं आती?** वह साजन भी है, बाप भी है। कहते हैं मुझे तुम नहीं खिलायेंगे! तुमको तो हमें खिलाना चाहिए ना! देखो, बाबा युक्तियाँ बतलाते हैं। तुम बाप अथवा साजन मानते हो ना। जो खिलाता है, पहले तो उनको खिलाना चाहिए। बाबा कहते हमको भोग लगाकर, हमारी याद में खाओ। इसमें बड़ी मेहनत है। बाबा बार-बार समझाते हैं, बाबा को याद जरूर करना है। बाबा खुद भी बार-बार पुरुषार्थ करते रहते हैं। तुम कुमारियों के लिए तो बहुत सहज है। तुम सीढ़ी चढ़ी ही नहीं हो। कन्या की तो साजन के साथ सगाई होती ही है। तो ऐसे साजन को याद कर भोजन खाना चाहिए। उनको हम याद करते हैं और वह हमारे पास आ जाते हैं। याद करेंगे तो भासना लेंगे। तो ऐसी-ऐसी बातें करनी चाहिए बाबा के साथ। तुम्हारी

यह प्रैक्टिस होगी रात को जागने से। अभ्यास पड़ जायेगा तो फिर दिन में भी याद रहेगी। भोजन पर भी याद करना चाहिए। साजन के साथ तुम्हारी सगाई हुई है। तुम्हीं से खाऊँ..... यह पक्का प्रण करना है। जब याद करेंगे तभी तो वह खायेंगे ना। उनको तो भासना ही मिलनी है क्योंकि उनको अपना शरीर तो नहीं है। कुमारियों के लिए तो बहुत सहज है, इनको जास्ती फैसिलटीज़ (सहूलियतें) हैं। शिवबाबा हमारा सलोना साजन कितना मीठा है। आधाकल्प हमने आपको याद किया है, अभी आप आकर मिले हो! हम जो खाते हैं, आप भी खाओ। ऐसे नहीं, एक बार याद किया बस, फिर तुम खुद खाते जाओ। उनको खिलाना भूल जाओ। उनको भूलने से उनको मिलेगा नहीं। चीज़ें तो बहुत खाते हो, खिचड़ी खायेंगे, आम खायेंगे, मिठाई खायेंगे..... ऐसे थोड़ेही शुरू में याद किया, खलास फिर और चीज़ें वह कैसे खायेंगे। साजन नहीं खायेंगे तो माया बीच में खा जायेगी, उनको खाने नहीं देगी। हम देखते हैं माया खा जाती है तो वह बलवान बन जाती है और तुमको हराती रहती है। बाबा युक्तियाँ सब बतलाते हैं। बाबा को याद करो तो बाप अथवा साजन बहुत राज़ी होगा। कहते हो बाबा तुम्हीं से बैठूँ, तुम्हीं से खाऊँ। हम आपको याद कर खाते हैं। ज्ञान से जानते हैं आप तो भासना ही लेंगे। यह तो लोन का शरीर है। याद करने से वह आते हैं। सारा मदार तुम्हारी याद पर है। इसको योग कहा जाता है। योग में मेहनत है।

08-10-2014

बाबा की श्रीमत को नोट करो

सन्यासी-उदासी ऐसे कभी नहीं कहेंगे। तुमको अगर पुरुषार्थ करना है तो बाबा की श्रीमत को नोट करो। पूरा पुरुषार्थ करो। बाबा अपना अनुभव बतलाते

हैं—कहते हैं जैसे कर्म मैं करता हूँ, तुम भी करो। वही कर्म मैं तुमको सिखलाता हूँ। बाबा को तो कर्म नहीं करना है। सतयुग में कर्म कूटते नहीं। बाबा बहुत सहज बातें बताते हैं। तुम्हीं से बैठूँ, सुनूँ, तुम्हीं से खाऊँ..... यह तुम्हारा ही गायन है। साजन के रूप में वा बाप के रूप में याद करो। गाया हुआ है ना – विचार सागर मंथन कर ज्ञान की प्वाइंट्स निकालते हैं। इस प्रैक्टिस से विकर्म भी विनाश होंगे, तन्दुरूस्त भी बनेंगे। जो पुरूषार्थ करेंगे उनको फायदा होगा, जो नहीं करेंगे उनको नुकसान होगा। सारी दुनिया तो स्वर्ग का मालिक नहीं बनती है। यह भी हिसाब-किताब है। बाबा बहुत अच्छी रीति समझाते हैं। गीत तो सुना बरोबर हम यात्रा पर चल रहे हैं। यात्रा पर भोजन आदि तो खाना ही पड़ता है, सजनी साजन के साथ, बच्चा बाप के साथ खायेंगे। यहाँ भी ऐसे है। तुम्हारी साजन के साथ जितनी लगन होगी उतना खुशी का पारा चढ़ेगा। निश्चयबुद्धि विजयन्ती होते जायेंगे।

01-12-2014

अभी के भोजन का ही गायन है

बाप कहते हैं मुझे याद कर भोजन बनाओ। शिवबाबा की याद का भोजन और किसको मिल न सके। अभी के भोजन का ही गायन है। वह ब्राह्मण लोग भल स्तुति गाते हैं परन्तु अर्थ कुछ नहीं समझते। जो महिमा करते हैं, समझते कुछ नहीं।

31-12-2014

कहते हैं भीलनी के बेर खाये

बाप को ऐसी-ऐसी अहिल्यायें, कुब्जायें, भीलनियों का भी उद्धार करना पड़ता है। कहते हैं भीलनी के बेर खाये। अब ऐसे ही भीलनी के थोड़े ही खा सकते

हैं। भीलनी से जब ब्राह्मणी बन जाती है तो फिर क्यों नहीं खायेंगे! इसलिए ब्रह्मा भोजन की महिमा है। शिवबाबा तो खायेंगे नहीं। वह तो अभोक्ता है। बाकी यह रथ तो खाते हैं ना। तुम बच्चों को कोई से आरग्यू करने की दरकार नहीं है।

25-02-2015

भल भोजन बनाओ, कुछ भी करो, बाप को याद करो

बाप तो तुम बच्चों को बिल्कुल सहज युक्ति बतलाते हैं—भोजन बनाओ, कुछ भी करो, बाप को याद करो। भक्ति मार्ग में श्रीनाथ द्वारे में भोग बनाते हैं, मुँह को पट्टी बांध देते हैं। ज़रा भी आवाज़ न हो। वह है भक्ति मार्ग। तुमको तो बाप को याद करना है। वो लोग इतना भोग लगाते हैं फिर वह कोई खाते थोड़ेही हैं। पण्डे लोगों के कुटुम्ब होते हैं, वह खाते हैं।

21-03-2015

तुम्हारा खान-पान, बोलचाल बहुत रॉयल होना चाहिए

तुम्हारा खान-पान, बोलचाल कितना रॉयल होना चाहिए। देवतायें कितना थोड़ा खाते हैं। उनमें कोई लालच थोड़े ही रहती है। 36 प्रकार के भोजन बनते हैं, खाते कितना थोड़ा हैं। खान-पान की लालच रखना—इसको भी आसुरी चलन कहा जाता है। दैवीगुण धारण करने हैं तो खान-पान बड़ा शुद्ध और साधारण होना चाहिए। परन्तु माया ऐसी है जो एकदम पत्थर बुद्धि बना देती है तो फिर पद भी ऐसा मिलेगा।

09-04-2015

बाप ने तुम्हें जो परहेज बताई है वह परहेज करो

बाप समझाते हैं—मीठे बच्चे, विश्व का मालिक बनने के लिए बाप ने तुम्हें जो परहेज बताई है वह परहेज करो, याद में रहकर भोजन बनाओ, योग में रहकर खाओ। बाप खुद कहते हैं मुझे याद करो तो तुम विश्व के मालिक फिर से बन जायेंगे।

28-04-2015

पहले शुभ काम करके आओ फिर भोजन खाओ

तुम बच्चों को अनेक प्रकार की युक्तियाँ बताते रहते हैं। किसको दान नहीं करेंगे तो फल भी कैसे मिलेगा। पहले-पहले 10-15 को रास्ता बताकर फिर बाद में भोजन खाना चाहिए। पहले शुभ काम करके आओ, इसमें ही तुम्हारा कल्याण है। कोई भी देहधारी को याद नहीं करो। यह तो पतित दुनिया है। पतित-पावन एक बाप को याद करो तो पावन दुनिया के मालिक बन जायेंगे। अन्त मति सो गति हो जायेगी। तो किसी न किसी को सन्देश सुनाकर फिर आए भोजन खाना चाहिए।

05-05-2015

तुम शिवबाबा के भण्डारे से खाते हो

भूख मरेंगे तो भी पहले बाबा फिर बच्चे। यह तो बाबा का भण्डारा है। तुम शिवबाबा के भण्डारे से खाते हो। ब्राह्मण भोजन बनाते हैं इसलिए ब्रह्मा भोजन कहा जाता है। जो पवित्र ब्राह्मण हैं, याद में रहकर बनाते हैं, सिवाए ब्राह्मणों के शिवबाबा की याद में कोई रह नहीं सकते। वह ब्राह्मण थोड़े ही शिवबाबा की याद में रहते हैं। शिवबाबा का भण्डारा यह है, जहाँ ब्राह्मण भोजन बनाते हैं।

ब्राह्मण योग में रहते हैं। पवित्र तो हैं ही। बाकी है योग की बात। इसमें ही मेहनत लगती है। गपोड़ा चल न सके। ऐसे कोई कह न सके कि मैं सम्पूर्ण योग में हूँ वा 80 परसेन्ट योग में हूँ। कोई भी कह न सके। ज्ञान भी चाहिए। तुम बच्चों में योगी वह है जो अपनी दृष्टि से ही किसी को शान्त कर दे। यह भी ताकत है। एकदम सन्नाटा हो जायेगा, जब तुम अशरीरी बन जाते हो फिर बाप की याद में रहते हो तो यही सच्ची याद है।

16-05-2015

ईश्वरीय यज्ञ से ही तुम्हारा शरीर निर्वाह होता है

यज्ञ रचा जाता है तो उसमें खान-पान की सब सामग्री चाहिए ना। यह है ईश्वरीय यज्ञ। ईश्वर ने आकर इस ज्ञान यज्ञ की स्थापना की है। तुमको पढ़ाते हैं, इस यज्ञ की महिमा बहुत भारी है। ईश्वरीय यज्ञ से ही तुम्हारा शरीर निर्वाह होता है। जो अपने को अर्पणमय समझते हैं, हम ट्रस्टी हैं, यह सब कुछ ईश्वर का है, हम शिवबाबा के यज्ञ से भोजन खाते हैं—यह समझ की बात है ना। 27-06-2015

भोजन सदैव एकरस होना चाहिए

जो विश्व का मालिक बनने वाले बच्चे हैं, उनके ख्यालात बहुत ऊँचे और चलन बड़ी रॉयल होगी। भोजन भी बहुत कम, जास्ती हबच नहीं होनी चाहिए। याद में रहने वाले का भोजन भी बहुत सूक्ष्म होगा। बहुतों की खाने में भी बुद्धि चली जाती है। तुम बच्चों को तो खुशी है विश्व का मालिक बनने की। कहा जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं। ऐसी खुशी में सदैव रहो तो खान-पान भी बहुत थोड़ा हो जाए। बहुत खाने से भारी हो जाते हैं फिर झुटका आदि खाते हैं। फिर कहते

बाबा नींद आती है। भोजन सदैव एकरस होना चाहिए। ऐसे नहीं कि अच्छा भोजन है तो बहुत खाना चाहिए।

27-07-2015

भोजन भी शुद्ध लेना है, अगर लाचारी नहीं मिलता तो राय पूछो

कोई भ्रष्ट कर्म करके किसको दुःख नहीं देना चाहिए। ईश्वरीय बच्चों का यह काम नहीं है। जो डायरेक्शन मिलते हैं उस पर चलना है, दैवीगुण धारण करने हैं। भोजन भी शुद्ध लेना है, अगर लाचारी नहीं मिलता तो राय पूछो। बाबा समझते हैं नौकरी आदि में कहाँ थोड़ा खाना भी पड़ता है। जबकि योगबल से तुम राजाई स्थापन करते हो, पतित दुनिया को पावन बनाते हो तो भोजन को शुद्ध बनाना क्या बड़ी बात है। नौकरी तो करनी ही है। ऐसे तो नहीं बाप का बनें तो सब कुछ छोड़ यहाँ आकर बैठ जाना है। कितने ढेर बच्चे हैं, इतने सब तो रह नहीं सकते। रहना सबको गृहस्थ व्यवहार में है।

03-08-2015

भोजन खाने समय भी बाप की महिमा करते रहो

भोजन खाने समय भी बाप की महिमा करते रहो। बाबा को याद कर खाने से भोजन भी पवित्र हो जाता है। जब बाप को निरन्तर याद करेंगे तब याद से ही बहुत जन्मों के पाप कटेंगे और तुम सतोप्रधान बनेंगे।

21-08-2015

भोजन भी शुद्धि से बनाना है

तुमको बुद्धि में रहता है शिवबाबा के लिए हम भोजन बनाते हैं। शिवबाबा के लिए हम यह करते हैं। भोजन भी शुद्धि से बनाना है। ऐसी चीज़ न हो जिससे खिटपिट हो जाए।

31-10-2015

भोजन तुम योग में रहकर बनाओ और खिलाओ

बाप कहते हैं तुम्हारे में ताकत बहुत है। भोजन तुम योग में रहकर बनाओ, खिलाओ तो बुद्धि इस तरफ खींचेगी। भक्ति मार्ग में तो गुरुओं का जूठा भी खाते हैं। तुम बच्चे समझते हो भक्ति मार्ग का विस्तार तो बहुत है, उनका वर्णन नहीं कर सकते।

05-11-2015

जिसको सर्विस का शौक होगा वह मुख से कहने बिगर रहेगा नहीं कोई फिर स्थूल सर्विस में अपनी हड्डी-हड्डी देते हैं। सबको राजी करते हैं। जैसे भोजन पकाते खिलाते हैं। यह भी सब्जेक्ट है ना। जिसको सर्विस का शौक होगा वह मुख से कहने बिगर रहेगा नहीं। फिर बाबा देखते भी हैं, देह-अभिमान तो नहीं है? बड़ों का रिगार्ड रखते हैं वा नहीं? बड़े महारथियों का रिगार्ड तो रखना होता है। हाँ, कोई-कोई छोटे भी होशियार हो जाते हैं तो हो सकता है बड़े को उनका रिगार्ड रखना पड़े क्योंकि बुद्धि उनकी गैलप कर लेती है।

09-02-2016

जब भोजन बनाते है तो बहुत ही स्वच्छता का ध्यान रखना है

यह है बेहद का चौपड़ा। स्वास्तिका में 4 भाग होते हैं। जैसे जगन्नाथपुरी में चावल का हण्डा रखते हैं, वह पक जाता है तो 4 भाग हो जाते हैं। वहाँ चावल का ही भोग लगाते हैं क्योंकि वहाँ चावल बहुत खाते हैं। श्रीनाथ द्वारे में चावल होते नहीं। वहाँ तो सब सच्चे घी का पक्का माल बनता है। जब भोजन बनाते हैं तो भी सफाई से मुँह बंद करके बनाते हैं। प्रसाद बहुत इज्जत से ले जाते हैं, भोग लगाकर फिर वह सब पण्डे लोगों को मिलता है। दुकान में जाकर रखते हैं। वहाँ बहुत भीड़ रहती है। बाबा का देखा हुआ है।

22-02-2016

देवताओं को हमेशा पवित्र भोजन का भोग लगाया जाता है, तो तुम भी पवित्र भोजन खाओ

आदत कोई नहीं पड़नी चाहिए। छी-छी आदतें भी मिटानी हैं। बाप कहते हैं जीते जी शरीर का भान छोड़ मुझे याद करो। देवताओं को भोग हमेशा पवित्र ही लगाया जाता है, तो तुम भी पवित्र भोजन खाओ। आजकल तो सच्चा घी मिलता नहीं, तेल खाते हैं। वहाँ तेल आदि होता नहीं। यहाँ तो डेरी में देखो प्योर घी रखा है, झूठा भी रखा है। दोनों पर लिखा हुआ है—प्योर घी, दाम में फ़र्क पड़ जाता है।

24-02-2016

जब तक आप समान नहीं बनाया है तब तक भोजन नहीं खाना है

बाबा को बम्बई में सर्विस करने का बहुत मजा आता था। बहुत नये-नये आते थे। बाबा की तो बहुत दिल होती है कि सर्विस करें। बच्चों को भी ऐसा रहमदिल बनना चाहिए। सर्विस पर लग जाना चाहिए। दिल में यह रहना चाहिए कि जब तक हमने किसी को आप समान नहीं बनाया है तब तक भोजन नहीं खाना है। पहले पुण्य तो करूँ। पाप आत्मा को पुण्य आत्मा बनायें फिर रोटी खायें। तो सर्विस में जुटा रहना चाहिए। किसका जीवन सफल बनायें तब रोटी खायें। आप समान ब्राह्मण बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

11-03-2016

जब राजाई थी तो 36 प्रकार के भोजन मिलते थे

अभी तुम समझते हो हम क्या थे, क्या बन रहे हैं। यहाँ तुमको सब गुण धारण करने हैं। खान-पान आदि भी सतोगुणी खाना है। देखना है देवताओं को क्या खिलाते हैं। श्रीनाथ द्वारे में जाकर देखो – कितने माल अथवा शुद्ध भोजन बनता है। वहाँ हैं ही वैष्णव। और वहाँ जगन्नाथ पुरी में देखो क्या मिलता है? चावल। वहाँ है वाम मार्ग के बहुत गन्दे चित्र। जब राजाई थी तो 36 प्रकार के

भोजन मिलते थे। तो श्रीनाथ द्वारे में बहुत माल बनते हैं। पुरी और श्रीनाथ का अलग-अलग है। पुरी के मन्दिर में बहुत गन्दे चित्र हैं, देवताओं की ड्रेस में। तो भोग भी ऐसा अच्छा नहीं लगता है। सिर्फ चावल की हण्डी चढ़ाते हैं। घी भी नहीं डालते। यह फ़र्क दिखाते हैं। भारत क्या था फिर क्या बन गया। अभी तो देखो क्या हालत है। पूरा अन्न भी नहीं मिलता है। उन्हों के प्लैन और शिवबाबा के प्लैन में रात दिन का फ़र्क है। वह सब प्लैन मिट्टी में मिल जायेंगे। नेचुरल कैलेमिटीज होंगी। अनाज आदि कुछ नहीं मिलेगा, बरसात कहाँ देखो तो बहुत पड़ती। कहाँ बिल्कुल पड़ती नहीं। कितना नुकसान कर देती है। 28-03-2016

योगबल से कोई भी चीज़ को तुम पावन बना सकते हो

योगबल से कोई भी चीज़ को तुम पावन बना सकते हो। परन्तु तुम याद भूल जाते हो। कोई को अभ्यास पड़ जाता है। बहुत सन्यासी लोग भी होते हैं जिनको भोजन का कदर रहता है, तो उस समय बहुत मन्त्र पढ़कर फिर खाते हैं। तुमको भी परहेज तो बताई है। कुछ भी माँस-मदिरा नहीं खाना है। तुम देवता बनते हो ना। देवतायें कभी किचड़पट्टी नहीं खाते। तो ऐसा पवित्र बनना है।

07-04-2016

हम शिवबाबा को याद करके ही भोजन खायेंगे

तुम बच्चे बाप की याद में रहते हो, बाबा का आह्वान नहीं करते। तुम बाप की याद में रह अपनी उन्नति कर रहे हो। बाप के डायरेक्शन पर चलने का भी शौक होना चाहिए। हम शिवबाबा को याद करके ही भोजन खायेंगे। गोया शिवबाबा के साथ खाते हैं। दफ्तर में भी कुछ न कुछ टाइम मिलता है। बाबा को लिखते हैं, कुर्सी पर बैठते हैं तो याद में बैठ जाते हैं। आफीसर आकर देखते हैं, वह बैठे-बैठे गुम हो जाते हैं अर्थात् अशरीरी हो जाते हैं। किसी की आँख बन्द हो जाती है, किसकी खुली रहती है। कोई ऐसा बैठा होगा - कुछ भी जैसे देखेगा नहीं। जैसे गुम रहते हैं। ऐसे-ऐसे होता है। बाबा ने रस्सी खींच

ली और मौज में बैठा है। उनसे पूछेंगे तुमको क्या हुआ? कहेंगे – हम तो बाप की याद में बैठे थे।

23-04-2016

यह तुम्हारा सर्वोत्तम जन्म है

जो दैवी सम्प्रदाय के हैं उनके सामने यह अक्षर गूँजेंगे, समझेंगे यह तो ठीक बात है। बरोबर हम देवी-देवता बनते हैं। हमारा भोजन भी शुद्ध चाहिए। दैवीगुण भी यहाँ धारण करने हैं, सर्वगुण सम्पन्न बनना है। अभी तुम बन रहे हो। यह लक्ष्मी-नारायण देवतायें हैं, इनको भोग लगाते हैं तो क्या सिगरेट आदि का भोग लगाते हैं? सिगरेट पीने वाला ऊंच पद पा नहीं सकता। यह कोई दैवी चीज़ नहीं है। सिगरेट पियेंगे वा लहसुन प्याज़ आदि खायेंगे तो और ही गिर जायेंगे। कहते हैं यह छोड़ने से तबियत खराब हो जाती है। बाप कहते हैं—शिवबाबा को याद करो। यह आदतें सब छोड़ दो तो तुम्हारी सद्गति होगी। सिगरेट की आदत तो बहुतायें में रहती है। समझानी दी जाती है, देवताओं को कभी भी यह भोग नहीं लगाया जाता है। तो तुमको इन जैसा यहाँ ही बनना है। तुम छी-छी चीज़ें खाते रहेंगे तो वह बांस आती रहेगी। सिगरेट वा शराब पीने वालों से दूर से ही बांस आती है। तो तुम बच्चों को दैवीगुण धारण करने हैं, वैष्णव बनना है। जैसे विष्णु की सन्तान हैं, तुम विष्णु अर्थात् दैवी सन्तान बनते हो। यहाँ हो तुम ईश्वरीय सन्तान। यह तुम्हारा सर्वोत्तम जन्म है। देवताओं से भी उत्तम तुम हो। तुम औरों को भी उत्तम बनाने वाले हो। यह है बेहद के बाप की मशीनरी।

22-06-2016

तुम्हें पवित्र भोजन ही खाना है

बाप कहते हैं मामेकम् याद करो। याद करना तुम्हारा काम है। डायरेक्शन देना – यही मेरी कृपा है। बाकी तो भल खाओ, पियो, घूमो, फिरो... तुम्हें पवित्र भोजन ही खाना है। हम देवी-देवता बनते हैं, वहाँ प्याज आदि थोड़े ही होगा। यह सब यहाँ छोड़ना है। यह चीजें वहाँ होती नहीं। बीज ही नहीं है। जैसे सतयुग में बीमारी आदि होती नहीं। अभी देखो कितनी बीमारियाँ निकली हैं। वहाँ तमोगुणी कोई चीज़ होती नहीं। हर चीज़ सतोप्रधान। यहाँ देखो मनुष्य क्या-क्या खाते हैं। अब बाप बच्चों को कहते हैं – मुझे याद करो और संग तोड़ मुझ संग जोड़ो तो तुम पावन बन जायेंगे।

07-07-2016

अभी तुम बच्चों की परवरिश तो बाप के हाथ में है

अभी तुम बच्चों की परवरिश तो बाप के हाथ में है। बस तुम्हीं से खाऊँ अर्थात् तुम्हारे ही भण्डारे से खाऊँ... तुम्हारी सारी परवरिश यहाँ ही होती है। जो सरेन्डर हो जाते हैं उनकी परवरिश तो होती ही है लेकिन जो मन से भी समझते हैं कि यह सब कुछ ईश्वर का (बाप का) है, मैं ट्रस्टी हूँ, हम श्रीमत पर ही चलकर खर्चा आदि करते हैं। ऐसे जो समझते हैं वह भी शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं। शिवबाबा के भण्डारे से खाने से हृदय शुद्ध होता है। ऐसे नहीं कि वह शिवबाबा के भण्डारे से नहीं खाते हैं। बाप के डायरेक्शन पर चलने वाले भी जैसे कि बाप के भण्डारे से खाते हैं। जिस भण्डारे से खाया, वह भण्डारा भरपूर काल कंटक दूर.... उसके बाद तुम कभी भी अकाले मृत्यु को नहीं पायेंगे। इस समय ही शिवबाबा आते हैं, उनकी महिमा भी गाई हुई है। शिव

जयन्ती भी मनाते हैं परन्तु उनका भण्डारा कैसे होता, यह कोई भी नहीं जानते हैं। बाबा भी बरोबर आते हैं ना। बच्चे जो भी आते हैं उनको शिवबाबा के भण्डारे से खाना मिलता है। अच्छा मेल सरेन्डर होता है तो ठीक है, अगर वह सरेण्डर नहीं होता तो मातायें क्या करें? क्योंकि कमाई है पति की। वह तो सरेन्डर होता नहीं। वह तो जब आमदनी करे तब स्त्री खाये। हाँ, जोड़ा सरेन्डर है तो फिर शिवबाबा के भण्डारे से परवरिश हो सकती है। यह बाप बच्चों को अच्छी रीति समझाते हैं।

02-08-2016

कुछ भी कर्म करते रहो परन्तु बुद्धि में बाप की याद रहे

कुछ भी कर्म करते रहो परन्तु बुद्धि में बाप की याद रहे। श्रीनाथ द्वारे में भोजन बनाते हैं तो बुद्धि में वह श्रीनाथ रहता है ना। बैठे ही मन्दिर में हैं। जानते हैं कि हम श्रीनाथ के लिए बनाते हैं। भोजन बनाया, भोग लगाया फिर घर वाले बच्चे आदि याद आते रहेंगे। वहाँ भोजन बनाते हैं। मुख बन्द, बात नहीं करेंगे। मन्सा से कोई विकर्म नहीं बनता है। वह श्रीनाथ के मन्दिर में बैठे हैं। यहाँ तो शिवबाबा के पास बैठे हो। यहाँ भी बाबा युक्ति बताते रहते हैं। बच्चे कोई फालतू बात नहीं करना। सदैव बाप से मीठी-मीठी बातें करनी हैं।

03-09-2016

बाप इस महफिल में आये हैं

बाप इस पतित महफिल में आते हैं, कितनी बड़ी महफिल है। मैं देवताओं की महफिल में कभी आता ही नहीं हूँ। जहाँ माल-ठाल, 36 प्रकार के भोजन मिल

सकें, वहाँ मैं आता ही नहीं हूँ। जहाँ बच्चों को रोटी भी नहीं मिलती, उन्हीं के पास आकर गोद में लेकर बच्चा बनाए वर्सा देता हूँ। साहूकारों को गोद में नहीं लेता हूँ, वे तो अपने ही नशे में चूर रहते हैं। खुद कहते है कि हमारे लिए तो स्वर्ग यहाँ ही है।

03-09-2016

बाबा हम आपकी याद में भोजन बनायेंगे

सवेरे उठ बाप को बहुत प्रेम से याद करना चाहिए। बाबा आपसे हम प्रतिज्ञा करते हैं। आपसे हम वर्सा जरूर लेंगे। बाबा आप कितने मीठे हो। आपकी याद से हमारे विकर्म विनाश होंगे। अन्दर में अपने से बात करना, उसको विचार सागर मंथन करना कहा जाता है। बाबा आपसे हम पूरा वर्सा लेकर ही छोड़ेंगे। अब हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान जरूर बनना है, तब ही सतयुगी राज्य पायेंगे। बाबा आपको हम निरन्तर याद करेंगे। 63 जन्मों में हमने कितने पाप किये हैं। कितना सिर पर बोझा है इसलिए बाबा हम आपको बहुत याद करते हैं। बाबा हम खाना पकायेंगे, घूमने जायेंगे तो भी आपकी याद में रहेंगे। ऐसे-ऐसे बातें करते प्रतिज्ञा करेंगे तो विकर्म विनाश होते जायेंगे। बाबा हम भोजन बनायेंगे आपकी याद में। हमको सतोप्रधान जरूर बनना है।

07-09-2016

याद में रहकर बनाओ, खाओ तो बहुत बल मिलेगा

यह शिवबाबा का भण्डारा है, इससे तुमको पवित्र भोजन मिलता है। ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ ही बनाते हैं, इसलिए इनकी महिमा अपरमअपार है। इससे तुम पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनते हो, इसलिए पवित्र भोजन अच्छा है। जितना तुम ऊँच होते जायेंगे उतना भोजन भी शुद्ध तुमको मिलेगा। योगयुक्त कोई

भोजन बनाये तो बल बहुत मिल जाए, वह भी आगे चल मिलेगा। सर्विसएबुल बच्चे जो सेन्टर पर रहते हैं, वह अपने ही हाथों से भोजन बनाकर खायें तो भी उसमें बहुत बल मिल सकता है। जैसे पतिव्रता स्त्री, पति के बिगर किसी को याद नहीं करती। ऐसे तुम बच्चे भी याद में रहकर बनाओ, खाओ तो बहुत बल मिलेगा। बाबा की याद में रहने से तुम विश्व की बादशाही लेते हो। बाबा राय तो देते हैं परन्तु अभी किसकी बुद्धि में नहीं आता। आगे चल हो सकता है - कहेंगे हम अपने हाथ से योगयुक्त हो भोजन बनाते हैं, तो सबका कल्याण हो जाए।

05-10-2016

ब्रह्मा बाबा अपना अनुभव बताते हैं

बाबा अपना मिसाल भी बतलाते हैं। भोजन खाता हूँ, बहुत कोशिश करता हूँ – याद में रह खाऊँ फिर भी भूल जाता हूँ। तो समझता हूँ बच्चों को तो मेहनत बहुत होती होगी। अच्छा बच्चे तुम ट्राई करके देखो। बाबा की याद में रहकर दिखाओ। देखो सारा समय याद ठहर सकती है। अनुभव सुनाना चाहिए।..... अभी बाबा तुमको ऐसे स्वर्ग में ले जाते हैं। जहाँ सब प्रकार के सुख हैं। देवताओं का 36 प्रकार का भोजन गाया हुआ है। अब तुम स्वर्ग का वर्सा बाप से लेते हो। वहाँ तो कितने स्वादिष्ट वैभव खाते रहेंगे और पवित्र होंगे। अब तुम उस दुनिया के मालिक बनते हो।

25-10-2016

यहाँ कर्म-विकर्म बनते हैं

यहाँ हठयोग की दरकार नहीं है। अपना शरीर तन्दरूस्त रखना है, मोस्ट वैल्युबुल शरीर है। भोजन भी शुद्ध खाना है। देवताओं को कैसा भोग लगाते हैं।

श्रीनाथ द्वारे जाकर देखो, बंगाल में तो काली पर बकरे का भोग लगाते हैं। वे अपने पित्रों को भी मछली खिलाते हैं। नहीं तो समझते हैं कि पित्र नाराज़ हो जायेंगे। कोई ने रिवाज़ डाला है, वह चलता रहता है। देवी-देवताओं के राज्य में कोई पाप नहीं होता। वह है रामराज्य। यहाँ कर्म-विकर्म बनते हैं। वहाँ कर्म-अकर्म बनते हैं।

19-11-2016

ब्राह्मण होते ही हैं संगम पर

उन ब्राह्मणों को समझाना है कि परमात्मा जब ब्रह्मा द्वारा आकर ब्रह्मा मुख वंशावली रचते हैं, वही सच्चे ब्राह्मण हैं। तुम तो प्रजापिता ब्रह्मा की औलाद हो ही नहीं। तुम सिर्फ अपने को ब्राह्मण कहलाते हो, परन्तु अर्थ नहीं जानते। ब्रह्मा भोजन जब खाते हैं तो संस्कृत में श्लोक पढ़ ब्रह्मा भोजन की महिमा गाते हैं। महिमा सारी फालतू करते हैं। उनसे पूछना चाहिए कि तुम ब्राह्मण कैसे ठहरे? पहले तो ब्रह्मा चाहिए - जिस द्वारा परमात्मा सृष्टि रचे। तो सच्चे ब्राह्मण हो तुम। ब्राह्मणों को तो चोटी दिखाते हैं ना। विराट रूप में फिर ब्राह्मण दिखाते नहीं। तो ब्राह्मण आये कहाँ से। तुम अपने को ब्राह्मण कहलाते हो तो परमात्मा जब आकर ब्रह्मा द्वारा नई रचना रचे तब ब्राह्मण हो, फिर ब्राह्मण ही देवता बनते हैं। ब्राह्मण होते ही हैं संगम पर।

24-11-2016

भोजन पर बैठते है तो बहुत अटेन्शन रखना है

बाबा अपना मिसाल भी बताते हैं। भोजन पर बैठते हैं तो भी बाबा को याद करते हैं। हम दोनों इकट्ठे खाते हैं। शरीर में दो आत्मायें हैं ना। याद करते-करते फिर भूल जाता हूँ। और-और ख्यालात आ जाते हैं।

30-12-2016

भोजन पर भी स्वयं को चेक करो

मीठे बच्चे, तुम अपनी डिग्री खुद ही देख सकते हो, सारे दिन में हम कितना याद करते हैं! भोजन पर भी देखो हमने बाप की याद में रह हर्षितमुख हो भोजन खाया? माशूक को याद करने से कशिश बढ़ेगी, बहुत खुशी रहेगी और बहुत जमा होता जायेगा।

18-01-2017

अपने हाथ का बनाकर खाने से ताकत बहुत आयेगी

बाप के साथ सच्चा रहना चाहिए। ऐसे नहीं मित्र-सम्बन्धियों को याद करते रहें। यह चाहिए, वह चाहिए... तुमको माँगना कुछ भी नहीं है। तुम कोई से कुछ ले नहीं सकते हो। किसके हाथ का खा नहीं सकते हो। हम अपने हाथ से बनाकर खाते हैं। अपने हाथ का बनाकर खाने से ताकत बहुत आयेगी। परन्तु इतनी मेहनत कोई करते नहीं हैं। माया बड़ी बलवान है। देह-अभिमान की बीमारी बड़ी मुश्किल जाती है। बड़ी मेहनत है। योग में रह नहीं सकते हैं तो बनाना ही छोड़ देते हैं। अच्छा योग में रहकर खा सकते हो।

27-01-2017

शिवबाबा का भण्डारा सदैव भरपूर है

भारत को महादानी कहा जाता है। इस समय बाप बच्चों को दान करते हैं, बच्चे बाप को दान करते हैं। बाबा शरीर सहित यह सब कुछ आपका है। बाप फिर कहते हैं यह विश्व की बादशाही तुम्हारी है। इस पुरानी दुनिया का सब कुछ खत्म होना है, क्यों न हम बाबा से सौदा कर लें। बाबा यह सब कुछ आपका है, भविष्य में हमको राजाई देना। हम यही चाहते हैं कोई और चीज़ की हमको दरकार नहीं। ऐसे कोई न समझे कि हम तन-मन-धन देते हैं तो हम कोई भूख मरेगे। नहीं, यह शिवबाबा का भण्डारा है, जिससे सबका शरीर निर्वाह होता रहता है और होता रहेगा। द्रोपदी का मिसाल। अब प्रैक्टिकल में पार्ट चल रहा

है। शिवबाबा का भण्डारा सदैव भरपूर है। यह भी एक परीक्षा थी, जिनको डर लगा वह सब चले गये। बाकी साथ देने वाले चले आये। भूख मरने की बात नहीं।

03-03-2017

बाप की याद में रह भोजन बनाकर किसी को खिलाओ तो उनका हृदय शुद्ध हो जायेगा

हम हैं ही शिवबाबा के पोत्रे, बाबा के घर के हो गये। समझते हैं - हम ब्राह्मण शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं। ब्राह्मण हो गये तो ब्राह्मणों का ही ब्रह्मा भोजन हो गया। शिवबाबा के भण्डारे का भोजन हो गया, यह निश्चय होना चाहिए। हम हैं ही शिवबाबा के।..... हम एक बार बलिहार गये तो वह शिवबाबा का भण्डारा हो गया। उनको ही ब्रह्मा भोजन कहा जाता है। समझा जाता है हम जो खाते हैं वह शिव के भण्डारे का है। पवित्र तो जरूर रहना ही है। भोजन भी पवित्र हो जाता है परन्तु जब बलिहार जाये ना। देना भी कुछ नहीं है, सिर्फ वारी जाना है। बाबा यह सब कुछ आपका है। अच्छा बच्चे ट्रस्टी होकर सम्भालो। शिवबाबा का समझ कर खायेंगे तो जैसे शिवबाबा के भण्डारे से खाते हो। अगर शिवबाबा को भूल गये तो फिर वह पवित्र हो न सके। तुम बच्चों को अपना घरबार भी सम्भालना है। परन्तु अपने को ट्रस्टी समझ घर में बैठे भी शिवबाबा के भण्डारे का ही खाते हो। जो भी बलिहार हुए वह शिवबाबा का हो गया। कुछ भी समझ में न आये तो पूछो। ऐसे नहीं शिवबाबा के खजाने से खर्च कर कोई पाप कर दो। शिवबाबा के पैसे से पुण्य करना है। एक-एक पैसा हीरे मिसल है।..... बाबा बैठ तुम बच्चों को परिचय देते हैं कि तुम जो भी ब्राह्मण हो, सरेन्डर हो तो तुम शिवबाबा के भण्डारे से खाते हो। सरेन्डर नहीं हो तो आसुरी भण्डारे से खाते हो। बाबा ऐसे थोड़ेही कहते हैं अपनी जिम्मेवारी आदि यहाँ ले आओ, सम्भालो तुम परन्तु ट्रस्टी होकर। निश्चयबुद्धि हो तो तुम जैसे शिवबाबा के भण्डारे से खाते हो। तुम्हारा हृदय शुद्ध होता जायेगा।.....

आज बाबा ने समझाया जिसने शिव के भण्डारे से खाया, पिया, वह भण्डारा भरपूर तो काल कंटक सब हो गया दूर। अमर हो जाते हैं। तुम बलि चढ़े तो शिवबाबा का सब कुछ हो गया, पक्का निश्चय चाहिए। कोई कुकर्म कर दिया तो बड़ा पाप चढ़ जायेगा। कदम-कदम पर राय लेनी है, लम्बी चढ़ाई है। कितने गिर पड़ते हैं। बाबा-बाबा कह 8-10 वर्ष रह फिर भी माया थपड़ लगा देती है। बाबा कहते हैं कदम-कदम पर कहाँ भी मूँझो तो राय पूछो। कई बच्चे पूछते हैं हम मिलेट्री में सर्विस करते हैं। वहाँ का भोजन खाना पड़ता है। बाबा कहते हैं कर ही क्या सकते हैं। बाप से मत ली तो रेस्पॉन्सिबुल बाबा है। बहुत पूछते हैं बाबा विलायत में जाना है, पार्टी में बैठना पड़ता है। भल वेजीटेरियन मिलता है, परन्तु हैं तो विकारी ना। तुम कोई भी बहाना कर सकते हो। अच्छा चाय पी लेते हैं। अनेक प्रकार की युक्तियाँ मिलती रहती हैं। इनका राइट हैण्ड धर्मराज भी बैठे हैं। इस समय कदम-कदम पर श्रीमत लेनी है।..... तुम समझा सकते हो हम ब्राह्मण हैं। मित्र सम्बन्धी आदि को तुम बाप की याद में रह भोजन बनाकर खिलाओ तो उनका हृदय भी शुद्ध हो जायेगा। पिछाड़ी में जो बचेंगे वह बहुत मजे देखेंगे। बाबा घड़ी-घड़ी अपना घर आदि सब कुछ दिखाते रहेंगे।

08-04-2017

याद में रहना बड़ी मेहनत है

बी.के. को जरूर शिवबाबा ही याद रहेगा क्योंकि दादे से वर्सा लेना है। याद में रहना बड़ी मेहनत है। ऐसे कोई मत समझे भोग लगता है हम वह खाते हैं तो बुद्धियोग बाबा से लग जायेगा। नहीं, यह तो शुद्ध भोजन है। परन्तु वह मेहनत न करे तो कुछ भी नहीं हुआ। श्रेष्ठाचारी याद से ही बनेंगे। पवित्रता फर्स्ट है।

14-04-2017

जो योगी होते हैं वह 4-5 दिन भोजन न भी खावें तो भी उनको परवाह नहीं रहती है

अच्छे जो योगी होते हैं वह 4-5 दिन भोजन न भी खावें तो भी उनको परवाह नहीं रहती है। बहुत खुशी में रहते हैं। अवस्था ऐसी रहनी चाहिए। देखना है मेरे में किसी चीज़ का लोभ तो नहीं है! एम रखनी चाहिए कि हम फुल पास होकर दिखावें। कल्प-कल्पान्तर की बाजी है। 29-04-2017

जब भोजन पर बैठते हो तो शिवबाबा को याद करो

ब्रह्मा से भी ब्रह्मा का बाप शिवबाबा ऊँच है ना। जब भोजन पर बैठते हो तो भी शिवबाबा को याद करो। मोस्ट बिलवेड बाप है। जैसेकि उनके साथ हम भोजन पा रहे हैं। इस याद में बहुत ताकत आयेगी। 11-05-2017

बाप कहते हैं लाडले बच्चे, तुम बहुत जन्मों के बाद आकर मिले हो। तुमने 84 जन्म पूरे लिए हैं। अब तुमको फिर देवता वर्ण में जाना है। इसमें परहेज भी बहुत है, अशुद्ध चीज़ खा न सकें। 20-05-2017

शिव बाबा की याद में रह भोजन बनाना चाहिए

सब बातें धारण करनी होती हैं। तो कोई भी काम आदि करते याद में रहना है। जैसे श्रीनाथ द्वारे में मुँह को कपड़ा बाँध काम करते हैं। श्रीनाथ कृष्ण को कहते हैं। श्रीनाथ का भोजन बनता है ना। शिवबाबा तो भोजन आदि नहीं खाते हैं। तुम पवित्र भोजन बनाते हो तो याद में रह बनाना चाहिए, तो उससे बल मिलेगा। कृष्ण लोक में जाने के लिए व्रत नेम आदि रखते हैं। अभी तुम जानते हो हम कृष्णपुरी में जा रहे हैं इसलिए तुमको लायक बनाया जाता है। 24-05-2017

खान-पान की जितना हो सके परहेज रखो

बाप कहते हैं कि मैं तुमको सहज राजयोग सिखाता हूँ। बाप कोई कष्ट नहीं देते। भल एरोप्लेन में जाओ, मोटरों में घूमों, फिरो। परन्तु खान-पान की जितना हो सके परहेज रखना है। भोजन पर दृष्टि देकर फिर खाना है, लेकिन बच्चे यह भूल जाते हैं। इसमें तो बाप को वा साजन को खुशी से याद करना है। साजन हम आपकी याद में आपके साथ भोजन खाते हैं। आपको अपना शरीर तो है नहीं। हम आपको याद कर खायेंगे और आप भासना लेते रहना। ऐसे याद करते-करते आदत पड़ जायेगी और खुशी का पारा चढ़ता रहेगा। ज्ञान की धारणा भी होती जायेगी। कुछ खामी है तो धारणा भी कम होगी। उनका तीर जोर से नहीं लगेगा।

17-06-2017

जैसा अन्न वैसा मन

तुम बच्चे अभी मलेच्छ से स्वच्छ बन रहे हो। तुमको ज्ञान है – मलेच्छ के हाथ का हम खा नहीं सकते। गाया हुआ भी है जैसा अन्न वैसा मन। जो खराब चीज़ खरीद करता है, जो बनाता है, जो खाता है - उन सबके ऊपर पाप पड़ जाता है।

29-06-2017

ब्रह्मा भोजन का कितना महत्व है ब्राह्मणों के भोजन से देवता बनते हो

परहेज के लिए यह समझाया जाता है। अपवित्र कोई वस्तु नहीं खानी है। बाकी घर में तो रहना ही है। सरेन्डर हो गया ना। बाबा यह सब कुछ आपका है। बाबा का सब कुछ समझकर चलते हैं तो वह जो खाते हैं सो यज्ञ का ही है। हम ट्रस्टी हैं। हम यज्ञ का खाते हैं, वो तो सतोगुणी ही है। अगर अर्पणमय नहीं हैं, अपने को ट्रस्टी नहीं समझते तो फिर वह यज्ञ का नहीं हुआ। पहले तो अपने को ट्रस्टी समझना है।..... बाप कहते हैं अपने को ट्रस्टी समझो। तुम जो खाते हो वह समझो हम शिवबाबा के यज्ञ से खाते हैं। सम्भाल भी करनी होती है। कोई

तमोगुणी भोग लगा न सके। मन्दिर में भी शुद्ध भोग लगता है। वह वैष्णव ही रहते हैं।..... आज तो ब्रह्मा भोजन है। शिवबाबा तो खाते नहीं हैं। वह तो अभोक्ता है। देवताओं को ब्राह्मणों का भोजन अच्छा लगता है क्योंकि इस ब्राह्मणों के भोजन से देवता बनते हैं। तो ब्राह्मणों के भोजन का कितना महत्व है। उनका बहुत असर पड़ता है। तुम्हें पक्के योगियों का भोजन मिले तो बुद्धि अच्छी हो जाए। सारा दिन शिवबाबा की याद में रहकर कोई स्वदर्शन चक्र फिराते भोजन बनाये, ऐसे योगी चाहिए। पवित्र तो बहुत होते हैं। विधवा माता अथवा कुमारियाँ भी पवित्र होती हैं। परन्तु योगिन भी हो। योगिन का भोजन मिले तो तुम्हारी बहुत उन्नति हो जाए। 5-7 ऐसे चाहिए। आगे चलकर तुम्हारी ऐसी अवस्था हो जायेगी। योग में बहुत मदद मिलेगी। ऐसे बच्चे हों जो योग में रहकर भोजन बनायें।

20-07-2017

पवित्र भोजन तो कहीं मिलेगा नहीं, सिवाए ब्राह्मणों के

पवित्र रहना ही है। देवताओं का भोजन भी कितना पवित्र होता है। तो हमको भी बहुत परहेज में रहना चाहिए। इसमें पूछने की बात भी नहीं रहती। बुद्धि समझती है - एक तो विकार सबसे खराब है। दूसरा-शराब, कबाब नहीं पीना है। बाकी लहसुन प्याज़ आदि की और पतित के भोजन की दिक्कत पड़ती है। बाप समझाते हैं पवित्र भोजन तो कहीं मिलेगा नहीं, सिवाए ब्राह्मणों के। बाप की याद में रहना पड़े। जितना तुम याद में रहेंगे तो पावन बन जायेंगे। बुद्धि से समझना होता है। हम अपने को किस युक्ति से बचाते रहें।

26-08-2017

शिवबाबा के भण्डारे में जो आता वह पावन बन जाता इसलिए इसको ब्रह्मा भोजन कहते

शिवबाबा का भण्डारा भरपूर है। कहते हैं ना-जिस भण्डारे से खाया वह भण्डारा भरपूर काल कंटक दूर... यहाँ तो अकाले मृत्यु होती रहती है। पतित-

पावन शिवबाबा के भण्डारे में जो आता है वह पावन बन जाता है, इसलिए इसको ब्रह्मा भोजन कहा जाता है। इनकी बड़ी महिमा है। योग भी बड़ा अच्छा चाहिए। योग में रह भोजन बनाओ और खाओ तो तुम्हारी बहुत अच्छी उन्नति होगी। उस भोजन में बहुत ताकत आ जाती है। योग में रह तुम भोजन खाओ तो बहुत ताकत मिलेगी और तन्दरूस्त भी रहेंगे। बाबा खुद कहते हैं कि हम बाबा की याद में बैठें जैसेकि हम और बाबा खाते हैं, परन्तु फिर भी भूल जाता हूँ। एक बाप की याद में ही शरीर छूटे, कोई घुटका नहीं आये, ऐसी प्रैक्टिस करनी चाहिए। बाबा की याद में रहने से एक तो शान्ति रहेगी और हेल्दी बनेंगे। भोजन पवित्र हो जायेगा।

08-09-2017

ब्रह्मा भोजन की बड़ी महिमा

कोई तो यह भी नहीं जानते कि बच्चों को भोजन कैसे खाना चाहिए। ब्रह्मा भोजन की बड़ी महिमा है। देवतायें भी ब्रह्मा भोजन की आश रखते हैं तब तो तुम ब्रह्मा भोजन ले जाते हो, इस ब्रह्मा भोजन में बहुत ताकत है। आगे चल भोजन योगी लोग बनायेंगे। अभी तो पुरुषार्थी हैं। जितना हो सकता है शिवबाबा की याद में रहने की कोशिश करते हैं। बच्चे तो हैं ना। खाने वाले बच्चे पक्के होते जायेंगे तो बनाने वाले भी पक्के निकलते रहेंगे। ब्रह्मा भोजन कह देते हैं। शिव भोजन नहीं कहते हैं। शिव का भण्डारा कहते हैं। **जो भी भेज देते हैं वह शिवबाबा के भण्डारे में पवित्र हो जाता है।** शिवबाबा का भण्डारा है। बाबा ने बतलाया है- श्रीनाथ द्वारे पर घी के कुए हैं। वहाँ पक्की रसोई बनती है और जगन्नाथ द्वारे पर कच्ची रसोई बनती है। फर्क है ना। वह है श्याम, वह है सुन्दर। श्रीनाथ पास बहुत धन है – वहाँ (उडीसा के तरफ) इतना धनवान नहीं होते। गरीब और साहूकार तो होते हैं ना। अभी तो बहुत गरीब हैं फिर साहूकार होंगे। इस समय तुम बहुत गरीब हो। वहाँ तो तुमको 36 प्रकार के भोजन मिलेंगे। तो ऐसी तैयारियाँ करनी चाहिए। भल प्रजा भी 36 प्रकार के भोजन खा

सकती है परन्तु राजाई का मर्तबा तो ऊँच है ना। वहाँ का भोजन तो बहुत फर्स्टक्लास होगा। सब चीजें ए-वन क्वालिटी की होती हैं। यहाँ सब चीजें जेड क्वालिटी की हैं। दिन-रात का फर्क है ना। अनाज आदि जो कुछ निकलता, सब सड़ा हुआ रहता है।

21-09-2017

भोजन बनाने वाले ब्राह्मणों का योग ठीक चाहिए

ब्रह्मा भोजन की बहुत महिमा है। भोजन बनाने वाले ब्राह्मणों का योग ठीक चाहिए तब तो भोजन में ताकत आयेगी। याद से ही तुमको जीयदान मिलता है। अपना हीरे जैसा जीवन बनाना है।

18-11-2017

भण्डारे में एक दो को बाबा की याद दिलाना चाहिए, बाबा को याद कर भोजन बनाओ।

भोग बनाते हो तो भी शिवबाबा को याद करना है। आगे भोग बनाते थे तो कृष्ण को, राम को, गुरूनानक को याद करते थे। गुरूवाणी पढ़ते थे। याद में बनायेंगे तब तो शुद्ध होगा। फिर प्रैक्टिस पड़ जाती है। यहाँ भी बाप के याद की प्रैक्टिस पड़ जानी चाहिए। जितना हो सके भोग वा भोजन बनाने के समय बाबा को याद जरूर करना है, बहुत-बहुत जरूरी है। परन्तु बच्चे याद करते नहीं। भण्डारे में एक दो को याद कराना चाहिए कि बाबा को याद कर भोजन बनाओ। ऐसे करते-करते पक्के हो जायेंगे। जिनको अभ्यास नहीं होगा, वह तो कभी याद करेंगे नहीं। ब्रह्मा भोजन की बहुत महिमा है तो जरूर कुछ होगा ना। देवतायें भी इच्छा रखते हैं ब्रह्मा भोजन की। तो याद में रह भोजन बनाने से अपना भी कल्याण होता है तो आने वालों का भी कल्याण होता है।..... आगे चलकर ऐसे बच्चे निकलेंगे जो बाप की याद में एकदम मस्त हो जायेंगे। याद में ही भोजन आदि बनायेंगे।..... सवेरे उठकर तुम बाबा की याद में भोजन बनायेंगे तो भोजन में ताकत रहेगी। इतना तुम बच्चों को नशा रहना चाहिए – सारे मनुष्य कुल का उद्धार करना है।

07-12-2017

भोजन बनाते समय ईश्वरीय स्वरूप की स्मृति हो, तब अन्न का असर मन पर होगा

भले भोजन बनाते हो, वह है तो स्थूल कार्य लेकिन भोजन में ईश्वरीय संस्कार भरना, भोजन को पावरफुल बनाना, वह तो ईश्वरीय सर्विस हुई ना। 'जैसा अन्न वैसा मन' कहा जाता है। तो भोजन बनाते समय ईश्वरीय स्वरूप होगा तब उस अन्न का असर मन पर होगा। तो भोजन बनाने का स्थूल कार्य करते भी ईश्वरीय सर्विस पर हो ना। आप लिखते भी हो – आन गॉडली सर्विस ओनली। तो उसका भावार्थ क्या हुआ? हम ईश्वरीय सन्तान सिर्फ और सदैव इसी सर्विस के लिए ही हैं। भल उसका स्वरूप स्थूल सर्विस का है लेकिन उसमें भी सदैव ईश्वरीय सर्विस में हूँ।

30-05-1971

जीवन में तीन चीजों की आवश्यकता – खुराक, खुशी और खजाना

जीवन में मुख्य तीन चीजों की आवश्यकता होती है। वह कौनसी हैं? चाहे लौकिक जीवन, चाहे अलौकिक जीवन—दोनों में तीन चीजों की आवश्यकता है। वह कौनसी? एक चाहिए खुराक, दूसरा खुशी और तीसरा खजाना। यह तीनों बातें आवश्यक हैं। खजाने के बिना कुछ नहीं होता, खुशी के बिना भी जीवन नहीं और खुराक किसको कहेंगे? खुशी तो हुई प्राप्ति की, बाकी खुराक कौनसी है? खजाना कौनसा है? खजाना है ज्ञान का, खुराक है याद से जो शक्ति भरती है? जीवन की इनर्जी खुराक है।

08-06-1971

अन्न का संगदोष

अन्न का संगदोष भी है। अगर कभी भी किसके भी समस्या अनुसार वा कोई सम्बन्धी के स्नेह के वश भी अन्नदोष में आ गई तो यह अन्न भी अपने मन को संग के रंग में लगा देता है। इसलिए इससे भी अपने को बचाते रहना।

11-06-1971

बुद्धि द्वारा भी अशुद्ध संकल्प वा पुराने संस्कार संकल्प रूप में टच न हों तब कहेंगे सच्चे वैष्णव

निरन्तर अर्थात् संकल्प में भी अशुद्धता नहीं है। संकल्प में भी अगर पुराने अशुद्ध संस्कारों का टच होता है तो भी सम्पूर्ण प्योरिटी तो नहीं कहेंगे ना। जैसे स्थूल भोजन भले कोई स्वीकार नहीं करते हैं, लेकिन हाथ भी लगाते हैं तो भी अपने को सच्चे वैष्णव नहीं समझते हैं। अगर बुद्धि द्वारा भी अशुद्ध संकल्प वा पुराने संस्कार संकल्प रूप में टच होते हैं तो भी सम्पूर्ण वैष्णव कहेंगे? कहा जाता है – अगर कोई देखता भी है अकर्तव्य कार्य, तो देखने का असर हो जाता है, उसका भी हिसाब बन जाता है। इस हिसाब से सोचो तो पुराने संस्कार व अशुद्ध संकल्प बुद्धि में भी टच होते हैं, तो भी सम्पूर्ण वैष्णव वा सम्पूर्ण प्योरिटी नहीं कहेंगे।

18-06-1971

आत्मिक भान में रह भोजन स्वीकार करो

आकार में निराकार को देखना – यह प्रैक्टिकल और नेचरल स्वरूप हो ही जाना चाहिए। अब तक शरीर को देखेंगे क्या? सर्विस तो आत्मा की करते हो ना। जिस समय भोजन स्वीकार करते हो, तो क्या आत्मा को खिलाते हैं वा शारीरिक भान में करते हैं?

28-07-1971

‘यज्ञमाता का देगड़ा दोनों बातों में प्रसिद्ध है’ एक तो स्थूल साधनों की दूसरे सर्वशक्तियों की कोई कमी नहीं रहेगी

जैसे स्थूल भोजन का लंगर लगता है ना, ऐसे ही आपके पास शक्ति लेने का दृश्य बहुत जल्दी सामने आयेगा अर्थात् आप लोगों को भी शक्ति देने का लंगर लगाना पड़ेगा। उसके लिये आप को अपने में पहले से ही स्टॉक जमा करना पड़ेगा। जो गायन है-द्रोपदी के देगड़े का। द्रोपदियाँ तो आप सब हो ना? द्रोपदी अर्थात् यज्ञमाता का देगड़ा दोनों बातों में प्रसिद्ध है। एक तो स्थूल साधनों की

कोई कमी नहीं और दूसरे सर्वशक्तियों की कोई कमी नहीं। सर्व-शक्तियों से सम्पन्न देगड़ा कब खाली नहीं होता। भल कितने भी आ जाएं। कितना बड़ा लंगर लग जावे कोई भूखा नहीं जा सकता। आगे चल कर, जब प्रकृति के प्रकोप होंगे और आपदायें आवेंगी, तब सबका पेट भरने के लिये कौन-सी चीज काम आयेगी? उस समय सबके अन्दर कौन-सी भूख होगी? अन्न की कमी या धन की? तब तो, शान्ति और सुख की भूख होगी। क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं के कारण, धन होते हुए भी, धन काम में नहीं आयेगा। साधन होते हुए भी साधनों द्वारा प्राप्ति नहीं हो सकेगी। जब सब स्थूल साधनों से व स्थूल धन से प्राप्ति की कोई आशा नहीं रहेगी, तब उस समय सबका संकल्प क्या होगा कि कोई शक्ति देवे, जो कि इन आपदाओं से पार हो सकें और कोई हमें शान्ति देवे। तो ऐसे-ऐसे लंगर बहुत लगने वाले हैं। उस समय पानी की एकाध बूंद भी कहीं दिखाई नहीं देगी। अनाज भी प्राकृतिक आपदाओं के कारण खाने योग्य नहीं होगा, तो फिर उस समय आप लोग क्या करेंगे? जब ऐसी परीक्षायें आपके सामने आयें तो, उस समय आप क्या करेंगे? क्या ऐसी परीक्षायें आपके सामने आयें तो, उस समय आप क्या करेंगे? क्या उस समय योग लगेगा या कि प्यास लगेगी। अगर कुँ भी सूख जावेंगे, फिर क्या करेंगे? जब यह विशेष आत्माओं का गुप है, तो उनका पुरुषार्थ भी विशेष होना चाहिए ना? क्या इतनी सहनशक्ति है? यह क्यों नहीं समझते – जैसा कि गायन है कि चारों ओर आग लगी हुई थी, लेकिन भट्टी में पड़े हुए पूंगरे, ऐसे ही सेफ रहे, जो कि उनको सेक तक नहीं आया। आप इस निश्चय से क्यों नहीं कहते? अगर योग-युक्त हैं, तो भल नजदीक वाले स्थान पर नुकसान भी होगा, पानी आ जायेगा लेकिन बाप द्वारा जो निमित्त बने हुए स्थान हैं, वह सेफ रह जावेंगे, यदि अपनी गफलत नहीं है तो। अगर अभी तक कहीं भी नुकसान हुआ है, तो वह अपनी बुद्धि की जजमेन्ट की कमजोरी के कारण। लेकिन अगर महारथी, विशाल बुद्धि वाले और सर्वशक्तियों के वरदान प्राप्त करने वाले, किसी भी स्थान में रहते हैं, तो

वहाँ सूली से काँटा बन जाता है अर्थात् वे सेफ रह जाते हैं। कैसा भी समय हो यदि शक्तियों का स्टॉक जमा होगा, तो आपकी शक्तियाँ प्रकृति को दासी जरूर बनावेंगी अर्थात् साधन स्वतः जरूर प्राप्त होंगे।

13-09-1974

शुद्ध संकल्प रूपी आहार को स्वीकार करो

दिव्य बुद्धि का, दिव्य नेत्र का शुद्ध आहार और व्यवहार शुद्ध संकल्प हैं। अगर अपने शुद्ध संकल्प रूपी आधार अर्थात् भोजन को छोड़ अशुद्ध आहार स्वीकार करते हो अर्थात् संकल्प के वशीभूत हो जाते हैं तो ऐसे मलेच्छ भोजन वाले मलेच्छ आत्मा कहलायेंगे अर्थात् महापापी, आत्मघाती कहलायेंगे। इसलिए इस महापाप के संकल्प से भी स्वयं को सदा बचाने का प्रयत्न करो। नहीं तो इस महापाप का दण्ड बहुत कड़े रूप में भोगना पड़ेगा। इसलिए दिव्य बुद्धि और सदा शुद्ध आहारी बनो।

19-09-1975

स्वीकार करने से पहले चेक करो

जैसे कोई बड़े आदमी होते हैं, वे जो कुछ भी स्वीकार करते हैं तो पहले उस चीज की चैकिंग होती है। जैसे प्रेज़िडेन्ट है या कोई भी विशेष व्यक्ति या बड़े-बड़े राजा होते हैं, तो उनका हर भोजन पहले चेक होता है, फिर वे स्वीकार करते हैं। उन्हें कोई भी वस्तु देगे तो पहले उनकी चेकिंग होती है कि कहीं उसमें कुछ अशुद्धि या मिक्स तो नहीं है? वह बड़े आदमी आपके आगे क्या हैं? आपके राज्य में बड़े आदमी पाँव भी नहीं रख सकते। अब भी आपके पाँव पर पड़ने वाले हैं। जब राजाओं के भी राजा बनते हो और सृष्टि के बीच श्रेष्ठ आत्मा कहलाते हो, तो आप विशेष आत्माओं का यह संकल्प रूपी बुद्धि का जो भोजन है, उसके लिये भी चैकिंग होनी चाहिए। जब बिना चैकिंग से स्वीकार करते हो, इसलिए धोखा खाते हो। तो हर संकल्प को पहले चेक करो। जैसे भोजन में विष मिक्स हो जाए तो वह मूर्छित कर देता है, ऐसे ही

संकल्प रूपी आहार व भोजन में पुराने शूद्रपन का विष मिक्स हो जाता है, तो बाप की स्मृति और समर्थी स्वरूप से मूर्छित हो जाते हो। तो अपने को विशेष आत्मायें समझते हुए अपने आप का स्वयं ही चेकर बनो। अगर इस कार्य में सदा बिज़ी रहेंगे व सदा होली-हंस स्वरूप में स्थित होंगे तो शुद्ध व अशुद्ध, शूद्रपन और ब्राह्मणपन को सहज ही चेक कर सकेंगे और बुद्धि इसी कार्य में बिजी होने कारण व्यर्थ की कम्पलेन्ट से फ्री हो जायेगी। 01-10-1975

मोटेपन को मिटाने का साधन - 'खान-पान का परहेज और एक्सरसाइज'

आत्मा का भारीपन अर्थात् मोटापन। जैसे आजकल के डाक्टर्स मोटेपन को कम कराते हैं, वजन कम कराते हैं, हल्का बनाते हैं, वैसे ब्राह्मणों की भी आत्मा के ऊपर जो वजन अथवा बोझ है अर्थात् मोटी बुद्धि है, उस बोझ को हटाकर 'महीन बुद्धि' बनो। वर्तमान समय यही विशेष परिवर्तन चाहिए। तब ही इन्द्रप्रस्थ की परियां बनेंगे। मोटेपन को मिटाने के लिए श्रेष्ठ साधन कौन-सा है? खान-पान का परहेज और एक्सरसाइज। परहेज में भी एक्सरसाइज करो और बुद्धि का भोजन संकल्प है उनकी परहेज रखो। जिस समय जो संकल्प रूपी भोजन स्वीकार करना हो उस समय वही स्वीकार करो। व्यर्थ संकल्प रूपी एक्सट्रा भोजन न हो। तो व्यर्थ संकल्पों के भोजन की परहेज हो। परहेज के लिए सेल्फ कन्ट्रोल (स्वयं पर नियन्त्रण) चाहिए। नहीं तो परहेज पूर्ण रीति नहीं कर सकते। तो सेल्फ कन्ट्रोल अर्थात् जिस समय जैसे चाहें, वहाँ बुद्धि लगा सकें तब ही महीन बुद्धि बन जायेंगे। 'महीनता ही महानता है।' जैसे शरीर की रीति से हल्कापन परसनैलिटी है, वैसे बुद्धि की महीनता व आत्माओं का हल्कापन ब्राह्मण जीवन की परसनैलिटी है। 23-01-1977

बाबा की याद में रहकर खाओ तो कभी कोई चीज़ नुकसान नहीं करेगी सर्विस पर बड़ा एक्यूरेट रहना चाहिए। म्यूज़ियम में भी तुम लोग रेस्ट का टाइम छोड़ते हो। गला थक जाता है, भोजन आदि भी खाना है परन्तु अन्दर में दिन-रात उछल आनी चाहिए। कोई आये तो उनको रास्ता बतायें। भोजन के टाइम कोई आ जाते हैं तो पहले उनको अटेन्ड कर फिर भोजन खाना चाहिए। ऐसी सर्विस वाला हो। कोई कोई को बड़ा देह-अभिमान आ जाता है, आराम-पसन्द, नवाब बन जाते हैं। बाप को समझानी तो देनी पड़े ना। यह नवाबी छोड़ो। फिर बाप साक्षात्कार भी करायेंगे—अपना पद देखो। देह-अभिमान का कुल्हाड़ा आपेही अपने पाँव पर लगाया है। बहुत बच्चे बाबा से भी रीस करते हैं। अरे, यह तो शिवबाबा का रथ है, इनकी सम्भाल करनी पड़ती है। यहाँ तो ऐसे हैं जो ढेर दवाइयाँ लेते रहते, डॉक्टरों की दवाई करते रहते। भल बाबा कहते हैं शरीर को तन्दुरुस्त रखना है परन्तु अपनी अवस्था को भी देखना है ना। तुम बाबा की याद में रहकर खाओ तो कभी कोई चीज़ नुकसान नहीं करेगी। याद से ताकत भर जायेगी। भोजन बड़ा शुद्ध हो जायेगा। परन्तु वह अवस्था है नहीं। बाबा तो कहते हैं ब्राह्मणों का बनाया हुआ भोजन उत्तम ते उत्तम है परन्तु वह तब जबकि याद में रहकर बनावें। याद में रह बनाने से उनको भी फायदा, खाने वाले को भी फायदा होगा।

10-12-1978

भोजन बनाने के समय पहले भोग लगाना है

भोजन बनाते हो, भोजन बनाने के समय पहले भोग लगाना है अर्थात् प्यारे ते प्यारे बाप को स्वीकार कराना है – इस स्मृति से भोजन बनाओ कि किसको खिलाना है! आजकल की दुनिया में अगर कोई प्राइम मिनिस्टर वा प्रेजीडेन्ट आपके पास खाने आते हैं, कितनी खुशी होती है, लेकिन बाप के आगे यह सब क्या है! तो सदा बाप आपके साथ भोजन खाते हैं – भक्त बिचारे बार-बार

घण्टियाँ बजा-बजा कर थक जाते हैं, बुलाते-बुलाते भूल भी जाते हैं – लेकिन बच्चों के साथ बाप का वायदा है - सदा साथ रहेंगे। तुम्हीं से खायें, तुम्हीं से बैठें, तो इससे बड़ी खुशी और क्या चाहिए! तो भोजन के समय भी तुम्हीं से खाऊँ यह स्लोगन याद रखो। ऐसे खुशी के खजाने को यूज करो।

12-01-1979

बाप के बच्चे भूखे नहीं मर सकते

ओम मण्डली सारे वर्ल्ड में रिचेस्ट है, मालामाल है, सब भूखे मर सकते हैं लेकिन बाप के बच्चे भूखे नहीं मर सकते। क्योंकि 'अमरभव' का वरदान मिला हुआ है।

30-01-1979

भोजन कैसे बनाएं व कैसे खाये?

डायरेक्शन प्रमाण खेल खेल रहे हैं ऐसा समझने से अथक रहेंगे। जिम्मेवार बाप है, आप निमित्त हैं। कुमार तो डबल निर्बन्धन हैं कोई पूँछ नहीं है। सदा लकी रहना, घबराना नहीं, अपने हाथ से भोजन बनाना बहुत अच्छा है। अपने लिए और बाप के लिए प्यार से बनाओ। पहले बाप को खिलाओ। अपने को अकेला समझते हो तो थक जाते हो। सदा यह समझो कि हम दो हैं, दूसरे के लिए बनाना है तो विधिपूर्वक प्यार से बनाओ तो बहुत अच्छा लगेगा। कुमारों का आपस में ग्रुप होना चाहिए, कभी कोई बीमार पड़े तो एक की ड्युटी हो। एक-दूसरे की मदद कर सेवा करो। कभी भी पूँछ लगाने का संकल्प नहीं करना, नहीं तो बहुत परेशान हो जायेंगे। बाहर से तो पता नहीं चलता लेकिन अगर लगा दिया तो मुश्किल हो जायेगी, अभी तो स्वतन्त्र हो फिर जिम्मेवारी बढ़ जायेगी। सभी ने बाप को कम्पेनियन बनाया है ना? तो एक कम्पेनियन छोड़कर दूसरा बनाया जाता है क्या? ये तो लौकिक में भी अच्छा नहीं माना जाता। तो

कुमार कभी अपने को अकेला नहीं समझो यदि अकेला समझा, तो उदास हो जायेंगे।

30-11-1979

बुद्धि का भोजन है – ‘पवित्र विचार’

तन और बुद्धि से जहाँ बिठायेँ, जैसे चलायेँ, जो करायेँ, जो खिलायेँ, वहीं करेंगे – यह वायदा किया हुआ है ना? तो बुद्धि का भोजन है – शुद्ध संकल्प। जो खिलाएँ वही खायेंगे – यह वायदा है तो फिर व्यर्थ संकल्प का भोजन क्यों करते हो? जैसे मुख द्वारा तमोगुणी भोजन, अशुद्ध भोजन नहीं खा सकते हो, ऐसे ही बुद्धि द्वारा व्यर्थ संकल्प वा विकल्प का अशुद्ध भोजन कैसे खा सकते हो? जो खिलायेंगे, वह खायेंगे फिर तो यह राँग हो जाता है। कहना और करना समान करने वाले हो ना। तो मन बुद्धि के लिए सदा यह भी वायदा याद रखो तो सहज योगी बन जावेंगे।

19-12-1979

ब्रह्मा भोजन, देवताओं के भोजन से भी अति श्रेष्ठ है

स्वर्ग में सतोप्रधान अति स्वादिष्ट रस वाले, वृक्ष के फल खायेंगे। यहाँ वृक्षपति द्वारा सर्व सम्बन्धों के रस, सर्व प्राप्ति-सम्पन्न प्रत्यक्ष फल खाते हो। वहाँ वैराइटी प्रकार का भोजन खायेंगे और यहाँ ब्रह्मा भोजन खाते जिसकी महिमा देवताओं के भोजन से भी अति श्रेष्ठ है। तो सदा सतयुगी प्रालम्ब और वर्तमान समय के महत्व और प्राप्ति को साथ-साथ रखो। तो वर्तमान समय को जानते हुए हर सेकण्ड और संकल्प को श्रेष्ठ बना सकेंगे।

07-01-1980

सत्यता की शक्ति के कारण आपकी दिनचर्या भी सत् हो गई है

सत्यता की शक्ति आपके नाम को, रूप को सत् अर्थात् अविनाशी बना देती है। आधाकल्प चैतन्य रूप, आधा कल्प चित्र में रूप। आधाकल्प प्रजा आपका नाम गायेगी, आधाकल्प भक्त आपका नाम गायेंगे। आपका बोल सत् वचन के

रूप में गाया जाता है। आज तक भी एक आधा वचन लेने से अपने को महान अनुभव करते। आपकी सत्यता की शक्ति से आपका देश भी अविनाशी बन जाता है। वेष भी अविनाशी बन जाता है। आधाकल्प देवताई वेष में रहेंगे, आधाकल्प देवताई वेष का यादगार चलेगा। अब अन्त तक भी भक्त लोग आपके चित्रों को भी ड्रेस से सजाते रहते हैं। कर्तव्य और चरित्र यह सब सत् हो गये। कर्तव्य का यादगार भागवत बना दिया है। चरित्रों की अनेक कहानियाँ बना दी हैं। यह सब सत्य हो गये। किस कारण? सत्यता की शक्ति कारण। आपकी दिनचर्या भी सत् हो गई है। भोजन खाना, अमृत पीना सब सत् हो गया है। आपके चित्रों को भी उठाते हैं, बिठाते हैं, परिक्रमा लगवाते हैं, भोग लगाते हैं, अमृत रखते और पीते हैं। हर कर्तव्य वा हर कर्म का यादगार बन गया है। इतनी शक्ति को जानते हो? इतनी अर्थॉरिटी से सबको चैलेन्ज करते हो वा सेवा करते हो? नये-नये आये हैं ना। ऐसे तो नहीं समझते हम थोड़े हैं, लेकिन आलमाइटी अर्थॉरिटी आपका साथी है। सत्यता की शक्ति वाले हो। पाँच नहीं हो लेकिन विश्व का रचयिता आपका साथी है। इसी फ़लक से बोलो।

11-04-1981

संकल्पों रूपी भोजन की जांच करो

विधाता द्वारा अविनाशी तकदीर की लकीर खिंचवा सकते हो। क्योंकि भाग्यविधाता दोनों बाप इस समय बच्चों के लिए हाज़िर नाज़िर हैं। जितना भाग्य विधाता से भाग्य लेने चाहो उतना अब ले सकते हो। इस समय ही भाग्य-दाता भाग्य बाँटने के लिए आये हैं। इस समय को ड्रामा अनुसार वरदान है। भाग्य के भण्डारे भरपूर खुले हुए हैं। तन का भण्डारा, मन का, धन का, राज्य का, प्रकृति दासी बनने का, भक्त बनाने का, सब भाग्य के भण्डारे खुले हैं। किसी को भी विधाता द्वारा स्पेशल प्राप्ति का चांस नहीं मिलता है। सबको एक जैसा चांस है। कोई भी बातों का कारण भी बंधन के रूप में नहीं है। पीछे आने का कारण, प्रवृत्ति में रहने का कारण, तन के रोग का कारण, आयु का कारण,

स्थूल डिग्री या पढ़ाई का कारण, किसी भी प्रकार के कारण का ताला भण्डारे में नहीं लगा हुआ है। दिन-रात भाग्य विधाता के भण्डारे भरपूर और खुले हुए हैं। कोई चौकीदार नहीं है। फिर भी देखो लेने में नम्बर बन जाते हैं। भाग्य विधाता नम्बर से नहीं देते हैं। यहाँ भाग्य लेने के लिए क्यू में भी नहीं खड़ा करते हैं। इतने बड़े भण्डारे हैं भाग्य के, जब चाहो जो चाहो अधिकारी हो। ऐसे है ना? कोई ताला और क्यू तो नहीं है ना? अमृतवेले देखो-देश विदेश के सभी बच्चे एक ही समय पर भाग्य विधाता से मिलन मनाने आते, तो मिलना हो ही जाता है। मिलन मनाना ही मिलना हो जाता है। माँगते नहीं हैं, लेकिन बड़े ते बड़े बाप से मिलना अर्थात् भाग्य की प्राप्ति होना। एक है बाप बच्चों का मिलना, दूसरा है कोई चीज मिलना। तो मिलन भी हो जाता है ओर भाग्य मिलना भी हो जाता है। क्योंकि बड़े आदमी कभी भी किसी को खाली नहीं भेज सकते हैं। तो बाप तो है ही विधाता, वरदाता, भरपूर भण्डारे। खाली कैसे भेज सकते! फिर भी भाग्यशाली, सौभाग्यशाली पदम भाग्य शाली, पद्मापद्म भाग्यशाली, ऐसे क्यों बनते हैं? देने वाला भी है, भाग्य का खज़ाना भी भरपूर है, समय का भी वरदान है। इन सब बातों का ज्ञान अर्थात् समझ भी हैं। अनजान भी नहीं हैं फिर भी अन्तर क्यों? (ड्रामा अनुसार)। ड्रामा को ही अभी वरदान है, इसलिए ड्रामा नहीं कह सकते।

ज्ञानी तू आत्मा अर्थात् समझदार सिर्फ रात को वा सुबह को चेंकिंग नहीं करते, लेकिन हर समय पहले चेंकिंग करेंगे, फिर करेंगे। जैसे बड़े आदमी पहले भोजन को चेक कराते हैं। तो यह संकल्प भी बुद्धि का भोजन है, इसलिए आप बच्चों को संकल्प की भी चैकिंग कर फिर स्वीकार करना है अर्थात् कर्म में लाना है। संकल्प ही चेक हो गया तो वाणी और कर्म स्वतः ही चेक हो जायेंगे। बीज तो संकल्प है ना। आप जैसे बड़े और कल्प में हुए ही नहीं हैं।

माया को बिठाना अर्थात् बाप से किनारा करना। इसलिए माया के भी नालेजफुल बन दूर से ही उसे भगा दो। नालेजफुल अनुभव के आधार से जानते

हैं कि माया की उत्पत्ति कब और कैसे होती है। माया का जन्म कमजोरी से होता है। किसी भी प्रकार की कमजोरी होगी तो माया आयेगी। जैसे कमजोरी से अनेक बीमारियों के जर्मस पैदा हो जाते हैं, ऐसे आत्मा की कमजोरी से माया को जन्म मिल जाता है। कारण है अपनी कमजोरी और उसका निवारण है – रोज की मुरली। मुरली ही ताजा भोजन है, शक्तिशाली भोजन है। जो भी शक्तियाँ चाहिए, उन सबसे सम्पन्न रोज का भोजन मिलता है। जो रोज शक्तिशाली भोजन ग्रहण करता है वह कमजोर हो नहीं सकता। रोज यह भोजन तो खाते हो न, इस भोजन का व्रत रखने की जरूरत नहीं। रोज ऐसे शक्तिशाली भोजन मिलने से मास्टर सर्वशक्तिवान् रहेंगे। भोजन के साथ-साथ भोजन को हजम करने की भी शक्ति चाहिए। अगर सिर्फ सुनने की शक्ति अर्थात् भोजन खाया और मनन शक्ति अर्थात् भोजन को हजम किया। दोनों शक्ति वाले कमजोर नहीं हो सकते।

14-10-1981

कोई भी चीज स्वीकार करने से पहले चेक करो यह बाप समान हैं?

जो भी संकल्प करो, बोल बोलो, कर्म करो, सम्बन्ध वा सम्पर्क में आओ, सिर्फ एक चेकिंग करो कि 'यह सब बाप समान हैं।' जो मेरा संकल्प वह बाप का संकल्प है। मेरा बोल बाप का बोल है। क्योंकि सबकी यही प्रतिज्ञा है बाप से, "कि जो बाप से सुना है वही सुनायेगे। जो बाप सुनायेगे वही सुनेगे। जो बाप ने सोच के लिए दिया है वहीं सोचेंगे", यह तो सबका वायदा है ना। जब यह वायदा है तो सिर्फ यह चेकिंग करो। यह चेकिंग करना मुश्किल तो नहीं है ना। पहले मिलाओ फिर प्रैक्टिकल में लाओ। हर संकल्प पहले बाप समान है – यह चेक करो। पहले भी सुनाया था कि जो द्वापर युगी राजे वा रजवाड़े होकर गये हैं, कोई भी चीज स्वीकार करेंगे तो पहले चेकिंग होती है। आप लोग तो फिर भी अच्छे राजे बने होंगे। लेकिन गिरे हुए राजाओं की भी इतनी खातिरी होती

तो आप सबका संकल्प भी बुद्धि का भोजन है। तो सब चेक करना चाहिए ना।

25-03-1981

मधुबन निवासियों को 36 गुण भी धारण करने पड़ेंगे

मधुबन निवासियों को सब बना बनाया आता है, एक ड्यूटी बजाई बाकी सब बना बनाया कहाँ से आता है, कितना आता है कोई संकल्प की जरूरत ही नहीं। सिर्फ सेवा करो और मेवा खाओ। 36 प्रकार के भोजन भी मधुबन वालों को बार-बार मिलते हैं। तो 36 गुण भी तो धारण करने पड़ेंगे। हरेक मधुबन निवासी को पवित्रता की लाइट के ताजधारी तो होना ही है। लेकिन डबल ताज। एक गुणों का ताज, दूसरा पवित्रता का ताज। जिस ताज में कम से कम 36 हीरे तो होने ही चाहिए।

25-03-1981

भोजन बनाते हो तो रूहानियत का बल भोजन में भर देते हो

चाहे कर्मणा सेवा भी करते हो तो कर्मणा द्वारा भी रूहों को रूहानियत की शक्ति भरते हो क्योंकि कर्मणा के साथ-साथ मन्सा सेवा भी करते हो। तो कर्मणा सेवा में भी रूहानी सेवा। भोजन बनाते हो तो रूहानियत का बल भोजन में भर देते हो, इसलिए भोजन ब्रह्माभोजन बन जाता है, शुद्ध अन्न बन जाता है। प्रसाद के समान बन जाता है। तो स्थूल सेवा में भी रूहानी सेवा भरी है।

10-01-1982

अगर किसी भी व्यक्ति या वस्तु में अच्छा लगता तो सब अच्छा लगना चाहिए

अभी मोह का अंश क्या है? नष्टोमोहा नहीं हुए हो क्या? अच्छा – मोह का रायल रूप कोई भी वस्तु व व्यक्ति अच्छा लगता है, यह, यह चीज मुझे अच्छी लगती है, मोह नहीं लेकिन अच्छी लगती है। अगर किसी भी व्यक्ति या वस्तु में

अच्छा लगता तो सब अच्छा लगना चाहिए – चत्तियों वाले कपड़े भी अच्छे तो बढ़िया कपड़ा भी अच्छा। 36 प्रकार के भोजन भी अच्छे तो सूखी रोटी और गुड़ भी अच्छा। हर वस्तु अच्छी, हर व्यक्ति अच्छा। ऐसे नहीं – यह ज्यादा अच्छा लगता है! यह वस्तु ज्यादा अच्छी लगती है ऐसा समझकर कार्य में नहीं लगाओ। दवाई है, दवाई करके भले खाओ। लेकिन अच्छा लगता है इसलिए खाओ, पियो, मौज करो लेकिन अंश को विदाई दे करके न्यारे बन प्रयोग करने में प्यारे बनो। समझा! – बापदादा के भण्डारे से स्वतः ही सर्व प्रमाण, सर्व प्राप्ति का साधन बना हुआ है, खूब खाओ लेकिन बाप के साथ-साथ खाओ, अलग नहीं खाओ। बाप के साथ खायेंगे, बाप के साथ मौज मनायेंगे तो स्वतः ही ‘लकीर के अन्दर अशोक वाटिका में होंगे’। जहाँ रावण का अंश आ नहीं सकता। खाओ, पियो, मौज करो लेकिन लकीर के अन्दर और बाप के साथ-साथ। फिर कोई बात मुश्किल नहीं लगेगी। हर बात मनोरंजन अनुभव होगी।

22-01-1982

सच्चे वैष्णव अर्थात् सदा गुण ग्राहक

कई आत्मायें गुण को जानते हुए भी जन्म-जन्म की गन्दगी को देखने के अभ्यासी होने कारण गुण को न देख अवगुण ही देखती हैं। लेकिन अवगुण को देखना, अवगुण को धारण करना ऐसी ही भूल है जैसे स्थूल में अशुद्ध भोजन पान करना। स्थूल भोजन में अगर कोई अशुद्ध भोजन स्वीकार करता है तो भूल महसूस करते हो ना! लिखते हो ना कि खान-पान की धारणा में कमजोर हूँ। तो भूल समझते हो ना! ऐसे अगर किसी का अवगुण अथवा कमजोरी स्वयं में धारण करते हो तो समझो अशुद्ध भोजन खाने वाले हो। सच्चे वैष्णव नहीं, विष्णु वंशी नहीं। लेकिन राम सेना हो जायेंगे। इसलिए सदा गुण ग्रहण करने वाले – ‘गुण मूर्त’ बनो।

अगर देखते भी हो तो मास्टर ज्ञान सूर्य बन किचड़े को जलाने की शक्ति है, तो शुभ-चिन्तक बनो। बुद्धि में जरा भी किचड़ा होगा तो शुद्ध बाप की याद टिक नहीं सकेगी। प्राप्ति कर नहीं सकेंगे।

29-03-1982

भोजन खून बन शक्ति के रूप में अपना बन जाता है

जैसे भोजन पहले अलग होता है, खाने वाला अलग होता है। लेकिन जब हजम कर लेते तो वही भोजन खून बन शक्ति के रूप में अपना बन जाता है। ऐसे ज्ञान भी मनन करने से अपना बन जाता, अपना खजाना है यह महसूसता आयेगी।

14-04-1983

खाना याद रहेगा तो गुडमार्निंग करना याद रहेगा

जो संगमयुग में प्राप्तियाँ हैं वह और कोई युग में नहीं हो सकतीं। संगमयुग है ही मौजों के नज़ारों का युग। मौजें ही मौजें हैं ना। खाओ तो भी बाप के साथ मौजों में खाओ। यह व्रत कभी भूलना नहीं। अगर गुडमार्निंग नहीं करेंगे तो खाना नहीं खायेंगे। खाना याद रहेगा तो पहले गुडमार्निंग करना याद रहेगा। गुडमार्निंग करके फिर खाना खाना। याद करो ज्ञान की पढ़ाई को, अच्छे गुण धारण करो तो विश्व में आप रूहानी गुलाब बन खुशबू फैलायेंगे।

फरिश्तों का आवाज नहीं होता। मनुष्य जो होते हैं वह आवाज करते हैं। आप ब्राह्मण सो फरिश्ते आवाज नहीं करो। ऐसा चलो जो किसी को पता ही न चलें। खाओ पिओ, चलो फरिश्ता बन करके।

17-05-1983

सदैव याद में रह – 'ब्रह्मा भोजन' खाने वाली पक्के रहना

विश्व परिवर्तन करने की सेवा के पहले अपना परिवर्तन करो। जो पहले की जीवन थी उसे बिल्कुल बदलकर, बस – श्रेष्ठ आत्मा हूँ, पवित्र आत्मा हूँ, महान आत्मा हूँ, भाग्यवान आत्मा हूँ, इसी याद में रहो। यह याद स्कूल या कालेज में जाकर भूलती तो नहीं हो ना! संग का रंग तो नहीं लगता! कभी खाने

पीने की तरफ कहाँ आकर्षण तो नहीं जाती। थोड़ा बिस्कुट या आइस्क्रीम खा लें, ऐसी इच्छा तो नहीं होती! सदैव याद में रहकर बनाया हुआ भोजन – ‘ब्रह्मा भोजन’ खाने वाली – ऐसे पक्के! देखना, वहाँ जाकर संग में नहीं आ जाना।
कुमारियाँ जितना भाग्य बनाने चाहे बना सकती हो। 17-05-1983

डायरेक्ट भोग लगाकर भोजन को परमात्म प्रसाद बना देते हो

36 प्रकार का भोजन भी इस ब्रह्मा भोजन के आगे कुछ नहीं हैं। क्योंकि डायरेक्ट बापदादा को भोग लगाकर इस भोजन को परमात्म प्रसाद बना देते हो। प्रसाद की वैल्यु आज अन्तिम जन्म में भी भक्त आत्माओं के पास कितनी है? आप साधारण भोजन नहीं खाते। प्रभु प्रसाद खा रहे हो। जो एक-एक दाना पच्चों से भी श्रेष्ठ है। ऐसी सर्व श्रेष्ठ आत्मायें हो। ऐसा रूहानी श्रेष्ठ नशा रहता है? चलते-चलते अपनी श्रेष्ठता को भूल तो नहीं जाते हो? 24-04-1984

मधुवन में सब कुछ बना-बनाया मिलता है

सदैव यह अनुभव करो कि जो भी मिल रहा है, वह बहुत अच्छा है। क्योंकि वृद्धि तो होनी ही है और परिवर्तन भी होना ही है। तो सभी को आराम से रहना-खाना मिल रहा है ना। खाना और सोना – दो चीजें ही चाहिए। माताओं को तो बहुत खुशी होती है क्योंकि बना बनाया भोजन यहाँ मिलता है। वहाँ तो बनाओ, भोग लगाओ – फिर खाओ। यहाँ बना हुआ, भोग लगा हुआ भोजन मिलता है। इसलिए माताओं को तो अच्छा आराम है। कुमारों को भी आराम मिलता है। क्योंकि उन्हों के लिए बड़ी प्रब्लम खाना बनाने की ही है। यहाँ तो आराम से बना हुआ भोजन खाया ना। 11-11-1989

एक कण दाना अनेक मुल्यों के समान है

अपने घर में आये वा बाप के घर में आये। पहुँच गये, यह देख बापदादा खुश होते हैं। आप भी बहुत खुश हो रहे हैं ना! यह खुशी सदा कायम रहे। सिर्फ

मधुबन तक नहीं –संगमयुग ही साथ रहे। बच्चों की खुशी में बाप भी खुश है। कहाँ-कहाँ से चलकर, सहन कर पहुँच तो गये ना। गर्मी-सर्दी, खान-पान सबको सहनकर पहुँचे हो। धूल मिट्टी की वर्षा भी हुई। यह सब पुरानी दुनिया में तो होता ही है। फिर भी आराम मिल गया ना। आराम किया? तीन फुट नहीं तो दो फुट जगह तो मिली। फिर भी अपना घर, दाता का घर मीठा लगता है ना। भक्ति मार्ग की यात्राओं से तो अच्छा स्थान है। छत्रछाया के अन्दर आ गये। प्यार की पालना में आ गये। यज्ञ की श्रेष्ठ धरनी पर पहुँचना, यज्ञ के प्रसाद का अधिकारी बनना, कितना महत्व है। एक कणा, अनेक मुल्यों के समान है। यह तो सब जानते हो ना! वह तो प्रसाद का एक कणा मिलने के प्यासे हैं और आपको तो ब्रह्मा भोजन पेट भरकर मिलेगा। तो कितने भाग्यवान हो! इस महत्व से ब्रह्मा भोजन खाना तो सदा के लिए मन भी महान बना जायेगा।

15-04-1984

सेवा अर्थ धन लगाना अर्थात् पूरा कल्प भिखारी बनने से बचना

ऐसे धन द्वारा सेवा के निमित्त बनने वाले 21 जन्म अनगिनत धन के मालिक बन जाते हैं। साथ-साथ द्वापर से अब तक भी ऐसी आत्मा कभी धन की भिखारी नहीं बनेंगी। 21 जन्म राज्य भाग्य पायेंगे। जो धन मिट्टी के समान होगा। अर्थात् इतना सहज और अकीचार होगा। आपकी प्रजा की भी प्रजा अर्थात् प्रजा के सेवाधारी भी अनगिनत धन के मालिक होंगे। लेकिन 63 जन्मों में किसी जन्म में भी धन के भिखारी नहीं बनेंगे। मजे से दाल-रोटी खाने वाले होंगे। कभी रोटी के भिखारी नहीं होंगे। तो एक जन्म दाता के प्रति धन लगाने से, दाता भी क्या करेगा? सेवा में लगायेगा। आप तो बाप के भण्डारी में डालते हो ना और बाप फिर सेवा में लगाते हैं। तो सेवा अर्थ वा दाता के अर्थ धन लगाना अर्थात् पूरा कल्प भिखारीपन से बचना। जितना लगाओ उतना द्वापर से कलियुग तक भी आराम से खाते रहेंगे। तो तन-मन-धन और समय सफल करना है।

रूहानी सेवाधारी की रूहानी झलक, रूहानी फलक सदा इमर्ज रूप में होनी चाहिए। रोटी बेलते भी 'स्वदर्शन चक्र' चलता रहे। लौकिक निमित्त भले स्थूल कार्य हो लेकिन स्थूल सूक्ष्म दोनों साथ-साथ, हाथ से स्थूल काम करो और बुद्धि से मंसा सेवा करो तो डबल हो जायेगा। हाथ द्वारा कर्म करते हुए भी याद की शक्ति से एक स्थान पर रहते भी, बहुत सेवा कर सकते हो। मधुबन तो वैसे भी लाइट हाउस है, लाइट हाउस एक स्थान पर स्थित हो, चारों ओर सेवा करता है। ऐसे सेवाधारी अपनी और दूसरों की बहुत श्रेष्ठ प्रालब्ध बना सकते हैं।

18-02-1985

'दाल रोटी खाओ भगवान के गीत गाओ'

सदा महादानी रहमदिल विश्व-कल्याणकारी। यह बाप के संस्कार सो आपके संस्कार हों। इसलिए स्वभाव और संस्कार सदा खुशी की प्राप्ति कराते हैं। ऐसे ही सच्ची कमाई की सुखमय सम्पत्ति है। तो अविनाशी खज़ाने कितने मिले हैं? हर एक खज़ाने की खानियों के मालिक हो। सिर्फ खज़ाना नहीं, अखुट अनगिनत खज़ाने मिले हैं? जो खर्चों, खाओ और बढ़ाते रहो। जितना खर्च करो उतना बढ़ता है। अनुभवी हो ना। स्थूल सम्पत्ति किसलिए कमाते हैं? दाल रोटी सुख से खावें। परिवार सुखी हो। दुनिया में नाम अच्छा हो! आप अपने को देखो कितने सुख और खुशी की, दाल रोटी मिल रही है। जो गायन भी है – 'दाल रोटी खाओ भगवान के गीत गाओ'। ऐसे गायन की हुई दाल रोटी खा रहे हो। और ब्राह्मण बच्चों को बापदादा की गैरन्टी है – ब्राह्मण बच्चा दाल रोटी से वंचित हो नहीं सकता। आसक्ति वाला खाना नहीं मिलेगा लेकिन दाल रोटी जरूर मिलेगी। दाल रोटी भी है, परिवार भी ठीक है और नाम कितना बाला है! इतना आपका नाम बाला है जो आज लास्ट जन्म तक आप पहुँच गये हो। लेकिन आपके जड़ चित्रों के नाम से अनेक आत्मायें अपना काम सिद्ध कर रही हैं। नाम आप देवी-देवताओं का लेते हैं। काम अपना सिद्ध करते हैं। इतना नाम

बाला है। एक जन्म नाम बाला नहीं होता, सारा कल्प आपका नाम बाला है। तो सुखमय, सच्चे सम्पत्तिवान हो।

24-02-1985

भगवान की सेवा तो सब करते हैं, यहाँ भगवान बच्चों की सेवा करता
यह जो कहावत है – ‘अपना घर दाता का दर’। यह कौन से स्थान के लिए है? वास्तविक दाता का दर अपना घर तो ‘मधुबन’ है ना। अपने घर में आने से आराम मिलता है ना। मन का भी आराम, धन का भी आराम। कमाने के लिए जाना थोड़े ही पड़ता। खाना बनाओ तब खाओ इससे भी आराम मिल जाता, थाली में बना बनाया भोजन मिलता है। यहाँ तो ठाकुर बन जाते हो। जैसे ठाकुरों के मंदिर में घण्टी बजाते हैं ना। ठाकुर को उठाना होगा, सुलाना होगा तो घण्टी बजाते। भोग लगायेंगे तो भी घण्टी बजायेंगे। आपकी भी घण्टी बजती हैं ना। आजकल फैशनेबल हैं तो रिकार्ड बजता है। रिकार्ड से सोते हो, फिर रिकार्ड से उठते हो तो ठाकुर हो गये ना। यहाँ का ही फिर भक्तिमार्ग में कापी करते हैं। यहाँ भी 3,4 बार भोग लगता है। चैतन्य ठाकुरों को 4 बजे से भोग लगाना शुरू हो जाता है। अमृतवेले से भोग शुरू होता। चैतन्य स्वरूप में भगवान सेवा कर रहा है बच्चों की। भगवान की सेवा तो सब करते हैं, यहाँ भगवान सेवा करता। किसकी? चैतन्य ठाकुरों की। यह निश्चय सदा ही खुशी में झुलाता रहेगा।

25-11-1985

ईश्वरीय प्रसाद का महत्त्व

ईश्वरीय याद में दाल-रोटी भी कितनी श्रेष्ठ लगती है! दुनिया के 36 प्रकार हों और आप की दाल-रोटी हो तो श्रेष्ठ क्या लगेगा? दाल-रोटी अच्छी है ना। क्योंकि प्रसाद है ना। जब भोजन बनाते हो तो याद में बनाते हो, याद में खाते हो तो प्रसाद हो गया। प्रसाद का महत्त्व होता है। आप सभी रोज़ प्रसाद खाते हो।

प्रसाद में कितनी शक्ति होती है! तो तन-मन-धन सभी में शक्ति आ गई। इसलिए कहते हैं — अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्मणों के खजाने में।

17-10-1987

जब निश्चय, नशा, योग की सिद्धि की शक्ति होगी तो सूखी रोटी भी नर्म रोटी का काम करेगी

जैसे स्थापना के आरम्भ में आसक्ति है वा नहीं, उसकी ट्रायल के लिए बीच-बीच में जानबूझकर प्रोग्राम रखते रहे। जैसे, 15 दिन सिर्फ ढोढ़ा और छाछ खिलाई, गेहूँ होते भी यह ट्रायल कराई गई। कैसे बीमार 15 दिन इसी भोजन पर चले। कोई भी बीमार नहीं हुआ। दमा की तकलीफ वाले भी ठीक हो गये ना। नशा था कि बापदादा ने प्रोग्राम दिया है! जब भक्ति में कहते हैं 'विष भी अमृत हो गया', यह तो छाछ थी! निश्चय और नशा हर परिस्थिति में विजयी बना देता है। तो ऐसे पेपर भी आयेंगे — सूखी रोटी भी खानी पड़ेगी। अभी तो साधन हैं। कहेंगे — दाँत नहीं चलते, हज़म नहीं होता। लेकिन उस समय क्या करेंगे? जब निश्चय, नशा, योग की सिद्धि की शक्ति होती है तो सूखी रोटी भी नर्म रोटी का काम करेगी, परेशान नहीं करेगी। आप सिद्धि-स्वरूप की शान में हो तो कोई भी परेशान नहीं कर सकता है। जब हठयोगियों के आगे शेर भी बिल्ली बन जाता, सांप खिलौना बन जाता, तो आप सहज राजयोगी, सिद्धि-स्वरूप आत्माओं के लिए यह सब कोई बड़ी बात नहीं है तो आराम से यूज करो लेकिन समय पर धोखा न दे - यह चेक करो। परिस्थिति, स्थिति को नीचे न ले आये।

25-10-1987

ब्रह्मा भोजन को ही कहा जाता है — दुःख भंजन भोजन

आप जैसा शुद्ध भोजन, याद का भोजन विश्व में किसको भी प्राप्त नहीं है! इस भोजन को ही कहा जाता है — दुःख भंजन भोजन। याद का भोजन सब दुःख दूर कर देता है। क्योंकि शुद्ध अन्न से मन और तन दोनों शुद्ध हो जाता है।

अगर धन भी अशुद्ध आता है तो अशुद्ध धन खुशी को गायब कर देता है, चिंता को लाता है। जितना अशुद्ध धन आता, माना धन आयेगा एक लाख लेकिन चिंता आयेगी पदमगुणा और चिंता को सदैव चिंता कहा जाता है। तो चिंता पर बैठने वाले को कभी खुशी कैसे होगी। और अशुद्ध धन भी अशुद्ध मन से आता है, पहले मन में अशुद्ध संकल्प आता है। लेकिन शुद्ध अन्न मन को शुद्ध बना देता है इसलिए धन भी शुद्ध हो जाता है। याद के अन्न का महत्त्व है, इसलिए ब्रह्मा भोजन की महिमा है। अगर याद में नहीं बनाते और खाते तो यह अन्न स्थिति को ऊपर नीचे कर सकता है। याद में बनाया हुआ और याद में स्वीकार करने वाला अन्न दवाई का भी काम करता और दुआ का भी काम करता। याद का अन्न कभी नुकसान नहीं कर सकता। 16-02-1988

भगवान खिला रहा है, ब्रह्मा-भोजन मिल रहा है

ब्रह्मा-भोजन खिलाता कौन है? नाम ही है - 'ब्रह्मा-भोजन'। ब्रह्मभोजन नहीं, ब्रह्मा भोजन। तो ब्रह्मा यज्ञ का सदा रक्षक है। हर एक यज्ञ-वत्स वा ब्रह्मा-वत्स के लिए ब्रह्मा बाप द्वारा ब्रह्मा-भोजन मिलना ही है। लोग तो वैसे ही कहते कि हमको भगवान खिला रहा है। मालूम है नहीं भगवान क्या, लेकिन खिलाता भगवान है। लेकिन ब्राह्मण बच्चों को तो बाप ही खिलाता है। चाहे लौकिक कमाई भी करके पैसे जमा करते, उसी से भोजन मंगाते भी हो लेकिन पहले अपनी कमाई भी बाप की भण्डारी में डालते हो। बाप की भण्डारी भोलानाथ का भण्डारा बन जाता है। कभी भी इस विधि को भूलना नहीं। नहीं तो, सोचेंगे, - हम खुद कमाते, खुद खाते हैं। वैसे तो ट्रस्टी हो, ट्रस्टी का कुछ नहीं होता है। हम अपनी कमाई से खाते हैं - यह संकल्प भी नहीं उठ सकता। जब ट्रस्टी हैं तो सब बाप के हवाले कर दिया। तेरा हो गया, मेरा नहीं। ट्रस्टी अर्थात् तेरा और गृहस्थी अर्थात् मेरा। आप कौन हो? गृहस्थी तो नहीं हो ना? भगवान खिला रहा है, ब्रह्मा-भोजन मिल रहा है - ब्राह्मण आत्माओं को यह नशा स्वतः

ही रहता है और बाप की गेरन्ती है — 21 जन्म ब्राह्मण आत्मा कभी भूखी नहीं रह सकती, बड़े प्यार से दाल-रोटी, सब्जी खिलायेंगे। यह जन्म भी दाल-रोटी प्यार की खायेंगे, मेहनत की नहीं। इसलिए सदा यह स्मृति रखो कि अमृतवेले से लेकर क्या-क्या भाग्य प्राप्त हैं! सारी दिनचर्या सोचो। 07-03-1988

सुख की रोटी खाने वाले आप हो इसलिए सदा खुशहाल हो

अपने को गरीब कभी नहीं समझना। सबसे साहूकार हम हैं। दुनिया में साहूकार देखना हो तो आपको देखें। क्योंकि सच्चा धन आपके पास है। विनाशी धन तो आज है, कल नहीं होगा। लेकिन अविनाशी धन आपके पास है। तो सबसे साहूकार आप हो। चाहे सूखी रोटी भी खाते हो, तो भी साहूकार हो क्योंकि खुशी की खुराक सूखी रोटी में भरी हुई है। उसके आगे और कोई खुराक नहीं। सबसे अच्छी खुराक खाने वाले, सुख की रोटी खाने वाले आप लोग हो। इसलिए सदा खुशहाल हो। कभी यह नहीं सोचना कि अगर साहूकार होते तो यह करते! साहूकार होते तो आते ही नहीं, वंचित रह जाते। तो ऐसे खुशहाल रहना जो आपको खुशहाल देख और भी खुशहाल हो जाएँ। 19-11-1989

बाप को अर्पण करना अर्थात् बाप का खाना

ट्रस्टी का अपना कुछ नहीं रहता। गृहस्थी में अपना-पन होता है, ट्रस्टी अर्थात् सब बाप का है। अपने हाथ से खाना बनाते हो तो भी समझते हो ना — ब्रह्मा भोजन खा रहे हैं। पहले भोग किसको लगाते हो? बाप को अर्पण करते हो ना? अर्पण करना अर्थात् बाप का खाना। ब्रह्मा भोजन खाते हो। चाहे बच्चों के अर्थ भी लगाते हो वह भी डायरेक्शन अनुसार लगाते हो। जैसे समर्पित बहनें वा भाई भिन्न-भिन्न कार्य में तन-मन भी लगाते तो धन भी लगाते हैं। ऐसे प्रवृत्ति में रहने वाले भी चाहे तन लगाते चाहे धन लगाते — बाप की श्रीमत प्रमाण ही अमानत समझ कार्य में लगाते हो — ऐसे करते हो ना? अमानत में ख्यानत अथवा मनमत

तो नहीं मिलाते हो ना। तो परमात्म-पालना सब ब्राह्मण आत्माओं को मिल रही है। पालना की जाती है शक्तिशाली बनने के लिए।

13-12-1989

जब भोग लगाया तो ब्रह्मा-भोजन हो गया

अविनाशी गीत है, इसीलिए अनहद है अर्थात् हद नहीं है। तो अनहद गीत बजता है या बजाना पड़ता है? और काम ही क्या है! गाओ और नाचो। योग लगाना भी क्या है! खुशी में नाचना ही तो है ना। बाप की महिमा गाते हो, खुशी में नाचते हो और क्या करते हो! इसी में ही सेवा है, इसी में ही योग है, इसी में ही ज्ञान वा धारणा है। नाचो और गाओ, ब्रह्मा-भोजन खाओ। जब भोग लगाया तो ब्रह्मा-भोजन हो गया ना। अगर भोग लगाकर, याद करके नहीं खाया तो साधारण खाना हो गया, उससे ताकत नहीं आयेगी, उससे सिर्फ पेट भरेगा लेकिन आत्मा में शक्ति नहीं आयेगी। तो क्या करना है? खाओ, नाचो और गाओ।

25-12-1989

रोज 36 प्रकार के भोजन नहीं प्यार की दाल-रोटी जरूर मिलेगी

दाल रोटी अच्छे ते अच्छी देने के लिए बापदादा बंधा हुआ है। रोज 36 प्रकार के भोजन नहीं देंगे लेकिन दाल-रोटी प्यार की जरूर मिलेगी। निश्चित है, इसको कोई टाल नहीं सकता। तो फिक्र किस बात का! दुनिया में फिक्र रहता है कि हम भी खायें, पीछे वाले भी खायें। तो आप भी भूखे नहीं रहेंगे, आपके पीछे वाले भी भूखें नहीं रहेंगे। बाकी क्या चाहिए? डनलप के तकिये चाहिए क्या! अगर डनलप के तकिये वा बिस्तर में फिक्र की नींद हो तो नींद आयेगी? बेफिक्र होंगे तो धरनी पर भी सोयेंगे तो नींद आ जायेगी। बाँहों को अपना तकिया बना लो तो भी नींद आ जायेगी। जहाँ प्यार है वहाँ सूखी रोटी भी 36 प्रकार का भोजन लगेगी। इसलिए बेफिक्र बादशाह हो। यह बेफिक्र रहने की बादशाही सब बादशाहियों से श्रेष्ठ है।

02-01-1990

बाप की श्रीमत है – ‘भोजन करने के पहले भोग लगाओ, पीछे खाओ’
जैसे बापदादा ने श्रीमत दी है कि भोजन करने के पहले भोग लगाओ, पीछे
खाओ। भोग लगाने का कर्म अगर नहीं करते और जल्दी-जल्दी में खा लिया
तो परिणाम क्या होगा? याद भूलने से जो ब्रह्मा-भोजन का, अन्न का मन पर
प्रभाव पड़ना चाहिए वह नहीं होगा। एक तो प्रभाव नहीं पड़ेगा और दूसरा बाप
की श्रीमत न मानने का नुकसान होगा। क्योंकि अवज्ञा हो गई ना।

20-01-1990

सदा स्मृति में रहो तो भण्डारा भरपूर रहेगा

आप सबका परमात्म मिलन, श्रेष्ठ आत्माओं का मिलन हर समय होता है ना!
तो हर समय सेरीमनी हुई ना! नाचो गाओ और खाओ – यही सेरीमनी होती है।
ब्रह्मा बाप के भण्डारे से खाते हो इसलिए सदा ब्रह्मा भोजन खाते हो। कोई प्रवृत्ति
वाले अपने कमाई से नहीं खाते हैं, सेन्टर वाले सेन्टर के भण्डारी से नहीं खाते
हैं लेकिन ब्रह्मा बाप के भण्डारे से, शिव बाप की भण्डारी से खाते हैं। न मेरी
प्रवृत्ति है, न मेरा सेन्टर है। प्रवृत्ति में हो तो भी ट्रस्टी हो, बाप की श्रीमत प्रमाण
निमित्त बने हुए हो, और सेन्टर पर हो तो भी बाप के सेन्टर हैं, न कि मेरे।
इसलिए सदा शिव बाप की भण्डारी है, ब्रह्मा बाप का भण्डारा है – इस स्मृति से
भण्डारी भी भरपूर रहेगी, तो भण्डारा भी भरपूर रहेगा। मेरापन लाया तो
भण्डारा व भण्डारी में बरक्कत नहीं होगी। किसी भी कार्य में अगर कोई प्रकार
की खोट अथवा कमी होती है तो इसका कारण बाप की बजाए मेरेपन की खोट
है इसीलिए खोट होती है। खोट शब्द कमी को भी कहा जाता है और खोट
शब्द अशुद्धि मिक्स को भी कहा जाता है। जैसे सोने में खोट (खाद) पड़ जाती
है ना। लेकिन ब्राह्मण जीवन तो हर सेकेण्ड सेरीमनी मनाने की बधाइयों की है।

18-01-1992

साधारण कर्म में भी विशेषता

साधारण से विशेष आत्मा बने तो स्मृति चेंज हो गई। चाहे कर्म साधारण हों लेकिन साधारण कर्म में भी विशेषता हो। मानो खाना बना रहे हो तो ये तो साधारण कर्म है ना, सब करते हैं लेकिन आपका खाना बनाना और दूसरों के खाना बनाने में फर्क होगा ना। आपके याद का भोजन और साधारण भोजन में अन्तर है। वो प्रसाद है, वो खाना है। तो विशेषता आ गई ना। याद में जो खाना खाते हो या बनाते हो तो उसको ब्रह्मा भोजन कहते हैं।

18-01-1994

बापदादा ऐसा हठ कराना नहीं चाहते

बापदादा और निमित्त आत्मायें सोचती तो यही हैं कि सब आराम से रहें लेकिन अगर ज्यादा संख्या में भी आराम लगता है तो खुशी की बात है। जहाँ भी रहे हुए हो, वहाँ खुश हो ? कोई तकलीफ नहीं है, और बुलायें? सिर्फ एक सूचना चली जाये कि जो आना चाहे वो आ जाये, तो क्या करना पड़ेगा? अखण्ड तपस्या करनी पड़ेगी। खुशी की खुराक खाओ और अखण्ड योग करो फिर तो सभी आ सकते हैं। करेंगे? थक नहीं जायेंगे, भूख नहीं लगेगी, सात दिन नहीं खायेंगे? सात दिन खाना नहीं मिलेगा! बापदादा ऐसा हठ कराना नहीं चाहते। सहजयोगी हो ना।

17-11-1994

सदा ज्ञान अमृत पीना और ब्रह्मा भोजन खाना

यहाँ भी आराम से नींद तो आती है ना? ज्ञान अमृत पीते-पीते सो जाते हो, तो कितनी अच्छी नींद करेंगे। ज्ञान अमृत पीना और ब्रह्मा भोजन खाना। सभी को बना-बनाया भोजन मिलता है। सभी खुश हैं। खुशानसीब भी हैं। और खुशमिजाज़ भी हैं।

23-12-1994

भोजन बनाते समय शुद्धि और विधि दोनों का ध्यान रखें

(मुन्नी बहन ने बापदादा के सामने फल की थाली सजाकर रखी) आपकी मूर्ति की भी विधिपूर्वक पूजा होगी। अच्छा है विधि पूर्वक बनाना, रखना - यह भी एक विशेषता है। यह भी आना चाहिये। ऐसे नहीं, जैसा आया वैसे भोग लगा दिया। आधा कच्चा, आधा पक्का लगा दिया कभी बनाने की सुस्ती हुई तो एक फल ही रख दिया। (डबल विदेशियों को देखते हुए) यह थक जाते हैं ना, डबल काम करते हैं, लौकिक काम भी करते हैं, सेन्टर भी सम्भालते हैं, अपना पुरुषार्थ भी करते हैं इसलिये थक जाते हैं। ऐसे चलाना नहीं। एक चीज़ ही प्यार से बनाओ। तीन नहीं बनाओ लेकिन एक भी प्यार से बनाओ। ऐसे नहीं कि ब्रेड तो बना हुआ है ब्रेड का ही भोग लगा दो - चलाना नहीं। जितनी विधि उतनी सिद्धि। अगर विधिपूर्वक करते हैं तो सिद्धि भी मिलती है। ब्राह्मण का अर्थ ही है — हर कार्य में एक्यूरेट, शुद्धिपूर्वक। शुद्धि भी हो, विधि भी हो — दोनों चाहिये।

07-03-1995

भोग के लिए एक ही चीज बनाओ लेकिन बनाओ प्यार से और विधिपूर्वक

जैसे खाने में भी खट्टी-मीठी चीज हो तो अच्छी लगेगी ना, और फीकी, सादी हो तो कहेंगे ये तो खाते ही रहते हैं। वो तो विशेष उत्सव पर मीठा मुख करते हैं और आप तो हर गुरुवार को मीठा मुख करते हो। भोग मीठा बनाते हो ना? या मीठा नहीं बनाते, नमकीन रख देते हो! डबल फॉरेनर्स बनाते हैं? कि ब्रेड का भोग लगा देते हो? सुनाया था ना कि ये भी विधि है। तो विधि को अपनाने से खुशी होती है। जैसे कोई अपना प्यारा आ जाता है तो क्या करते हो? प्यार से उसके लिये बनाते हो ना। बाप से प्यार है तो दो चीज़ भल नहीं बनाओ, एक ही चीज बनाओ लेकिन बनाओ प्यार से और विधिपूर्वक। ऐसे नहीं, ऑफिस का टाइम हो गया और गैस पर हलुआ बन रहा है, टाइम नहीं है तो यही लगा दो।

(सभी हँस रहे हैं) अच्छा नहीं लगता है ना इसीलिये हँसी आती है। बापदादा तो आपके प्यार का फल भी प्यार से ही स्वीकार करते हैं लेकिन जो स्टूडेंट आते हैं वो अपने-अपने स्थान पर इतनी चीजें तो नहीं बना सकते, इसीलिये बाप बच्चों के प्रति भी ये नियम रखते हैं। कम से कम हर गुरुवार उन्हों को वेरायटी मिलनी चाहिये। तो बाप भी खा लेंगे, बच्चे भी खा लेंगे।

मेहनत तो बहुत करते हो लेकिन मुहब्बत से मेहनत करते हो तो मेहनत मुहब्बत में बदल जाती है। वैसे तो डबल विदेशी स्वयं भी खाना बनाने के लिये टाइम नहीं होने के कारण जैसे आता है वैसे चलते रहते हैं। डबल विदेशियों का ब्रह्मा भोजन भी बहुत ईज़ी है। इण्डिया का ब्रह्मा भोजन और डबल विदेशी में ब्रह्मा भोजन — कितना फर्क होता है! जो इण्डियन बहनें है वो तो करते होंगे। लेकिन जहाँ सिर्फ डबल विदेशी है उन्हों का ब्रह्मा भोजन तो रोज़ हो सकता है। अच्छा है तबियत के लिये भी ठीक है और सहज भी है। लेकिन गुरुवार को कुछ न कुछ बनाना।

16-03-1995

सब तन्दुरुस्त हैं माना ब्रह्मा भोजन अच्छा मिलता है

नियम भी रखने पड़ते हैं। कई ऐसे भी सोचते हैं कि ये क्या बैज लगाओ तभी खाना मिलेगा। आपको खाने पर तंग करते हैं ना? लेकिन ये करना ही पड़ता है। क्योंकि कायदे में फायदे हैं। ये बंधन नहीं है लेकिन विघ्नों से निर्बन्धन बनाने का साधन है। देखो आप सभी इस सीजन के समाप्ति में भोग डालने वाली आत्मायें हो। तो कितना अच्छा चांस मिला है। सभी खुश हो? सब तन्दुरुस्त भी हो या बीमार भी कोई टेन्ट में सोया हुआ है। आप तो यहाँ बैठे हुए हैं और आपके साथी? कोई नहीं। इससे सिद्ध है सब इतने तन्दुरुस्त हैं माना ब्रह्मा भोजन बहुत अच्छा मिला है। देखो पतली-पतली रोटी तो मिलती हैं। जली हुई तो नहीं मिलती? बापदादा ने रिजल्ट सुनी है कि ब्रह्मा भोजन बहुत अच्छा बनता है।

31-03-1995

दिलशिकस्त नहीं बनो, सच्चे हैं तो बापदादा दालरोटी अवश्य खिलायेगा

मन से भी दिलशिकस्त नहीं बनो। और धन भी नीचे-ऊपर होता है, जब करोड़पतियों का ही नीचे-ऊपर होता है तो आप लोग उसके आगे क्या हो। वो तो होना ही है। लेकिन आप लोगों को निश्चय पक्का है कि जो बाप के साथी हैं, सच्चे हैं तो कैसी भी हालत में बापदादा दाल-रोटी जरूर खिलायेगा। दो-दो सब्जी नहीं खिलायेगा, दाल-रोटी खिलायेगा। लेकिन ऐसे नहीं करना कि काम से थक करके बैठ जाओ और कहो बाबा दाल-रोटी खिलायेगा। ऐसे अलबेले या आलस्य वाले को नहीं मिलेगा। बाकी सच्ची दिल पर साहेब राजी है। और परिवार में भी खिटखिट तो होनी है। जब आप लोग कहते हो कि अति के बाद अन्त होना है, कहते हो! अति में जा रहा है और जाना है तो परिवार में खिटखिट न हो, ये नहीं होना है, होना है! लेकिन आप ट्रस्टी बन, साक्षी बन परिस्थिति को बाप से शक्ति ले हल करो। गृहस्थी बनकर सोचेंगे तो और गड़बड़ होगी। पहले बिल्कुल न्यारे ट्रस्टी बन जाओ। मेरा नहीं। ये मेरापन-मेरा नाम खराब होगा, मेरी ग्लानि होगी, मेरा बच्चा और मुझे..., मेरी सास मेरे को ऐसे करती है ... ये मेरापन आता है ना तो सब बातें आती हैं। मेरा जहाँ भी आया वहाँ बुद्धि का फेरा हो जाता है, बदल जाते हैं। अगर बुद्धि कहाँ भी उलझन में बदलती है तो समझ लो ये मेरापन है, उसको चेक करो और जितना सुलझाने की कोशिश करेंगे उतना उलझेगा। इसलिए सभी बातों में क्या नहीं बनना है? दिलशिकस्त नहीं बनना है।

18-01-1996

ब्रह्मा भोजन से बीमार भी ठीक हो गये

देखो भक्ति के मेले तो बहुत किये हैं, उसमें तो खाने के साथ मिट्टी भी खाते हैं, मिट्टी में सोते हैं, मिट्टी में खाते हैं। आपको ब्रह्माभोजन अच्छा मिला ना।

ब्रह्माभोजन ठीक मिला? कोई को ब्रह्मा भोजन में तकलीफ हुई? तबियत खराब तो नहीं हुई! अच्छा बीमार भी ठीक हो गये? 18-01-1997

अकेले खाते हो तो आपकी गलती है

अगर खाते भी हो तो बापदादा के साथ खाते हो। अकेले खाते हो तो आपकी गलती है। बाप तो कहते हैं मेरे साथ खाओ। 31-01-1998

प्रसाद सिर्फ अपने प्रति नहीं यूज करते, बांटा जाता, प्रभु प्रसाद है

जैसे प्रसाद होता है ना उसको कोई अपना नहीं कहेगा कि मेरा प्रसाद है, प्रभु प्रसाद है। ये विशेषतायें भी प्रभु प्रसाद हैं। प्रसाद सिर्फ अपने प्रति नहीं यूज किया जाता है, बांटा जाता है। बांटते हो महादानी हो, वरदानी भी हो। पाण्डव भी वरदानी, महादानी हैं, शक्तियां भी महादानी हैं? एक दो घण्टे के महादानी नहीं, खुला भण्डार। इसीलिए बाप को भोला भण्डारी कहते हैं, खुला भण्डार है ना। आत्माओं को अंचली देते जाओ, कितनी बड़ी लाइन हैं भिखारियों की। और आपके पास कितना भरपूर भण्डार है? अखुट भण्डार है, खुटने वाला है क्या? बांटने में एकानामी तो नहीं करते? इसमें फ्राक दिली से बांटो। व्यर्थ गंवाने में एकानामी करो लेकिन बांटने में खुली दिल से बांटो। 08-10-2002

डबल विदेशियों का तो डबल पक्का होगा ना

व्रत लेते हैं — खाने-पीने का। खाने पीने का व्रत भी आवश्यक होता है। क्यों? आप ब्राह्मणों ने भी खाने-पीने का व्रत पक्का लिया है ना! जब मधुबन आने का फार्म सबसे भराते हो, तो यह भी फार्म में भराते हो ना — खाना-पीना शुद्ध है? भराते हो ना! तो खाने-पीने का व्रत पक्का है? है पक्का कि कभी-कभी कच्चा हो जाता है? डबल विदेशियों का तो डबल पक्का होगा ना! डबल विदेशियों का डबल पक्का है या कभी थक जाते हो तो कहते हो अच्छा आज थोड़ा खा लेते

हैं। थोड़ा ढीला कर देते हैं, नहीं। खाने-पीने का पक्का है, इसीलिए भक्त लोग भी खाने-पीने का व्रत लेते हैं।

28-02-2002

ब्रह्मा भोजन, यज्ञ का कणा-कणा बहुत वैल्युबुल है

यज्ञ सेवा का चांस मिला है। यज्ञ सेवा का फल बहुत बड़ा है क्योंकि यज्ञ सेवा अर्थात् ब्राह्मण आत्माओं की सेवा। भक्ति में तो 8-10 ब्राह्मणों को भोजन खिलाया, कुछ किया तो समझते हैं बड़ा पुण्य हो गया लेकिन यहाँ 10 हजार, 12 हजार, 8 हजार ब्राह्मणों की सेवा का चांस मिलता है। यज्ञ पिता के यज्ञ की सेवा है। ब्रह्मा भोजन का, यज्ञ का कणा-कणा बहुत वैल्युबुल है और आप ब्राह्मणों को वह ब्रह्मा भोजन कितना प्यार से प्राप्त होता है। यह ब्रह्मा भोजन कम नहीं है। जिसके भी भाग्य में ब्रह्मा भोजन होता है उनको पता नहीं होता है कि इसका फल क्या मिलना है लेकिन मिलता जरूर है। इसलिए भक्ति में भी कहते हैं शिव के भण्डारे भरपूर काल कंटक सब दूर। तो खाने वाले को कितना फल होगा।

15-12-2004

दाल रोटी देने के लिए तो बापदादा बंधा हुआ है

बापदादा तो देखते हैं जो भी अपने स्व-इच्छा से अपने को सेवा में जीवन सहित समर्पण करते हैं, उन सभी समर्पित बच्चों को शरीर निर्वाह का साधन अवश्य सहज प्राप्त होता है। खाओ, पिओ प्रभु के गुण गाओ। सेवा करते हैं, भाषण करते हैं, कोर्स कराते हैं, यह क्या है? प्रभु के गुण ही तो गाते हैं। और दाल रोटी देने के लिए तो बापदादा बंधा हुआ है। 36 प्रकार का भोजन नहीं खिलायेगा, वह कभी-कभी खिला देगा। तो बहुत अच्छा - चाहे ट्रस्टी बनके भी सेवा कर रहे हैं, अगर ट्रस्टी हैं, सच्चे ट्रस्टी, मतलब के ट्रस्टी नहीं, सच्चे ट्रस्टी हैं तो बापदादा कभी भूखा नहीं रख सकता। दाल रोटी जरूर खिलायेगा क्योंकि बापदादा भूखा रहता है क्या? जब बापदादा भूखा नहीं रहता, सभी भोग

लगाते हैं। आप सभी भोग लगाते हैं ना, चतुराई तो नहीं करते, एक गिट्टी खिलाओ, बाकी भूल जाओ, नहीं। अगर ट्रस्टी हैं तो बापदादा भी बंधा हुआ है।

31-12-2004

पुण्य का खाता बहुत बड़ा जमा हो गया

एक ब्राह्मण को खिलाते हैं, सेवा करते हैं उसका भी पुण्य मानते हैं। आपने तो कितने ब्राह्मणों की सेवा की। तो आपके पुण्य का खाता बहुत बड़ा जमा हो गया। और सच्चे ब्राह्मणों की सेवा की। तो पुण्य का खाता भी इतना महान हो गया। अच्छा है। उमंग-उत्साह से स्व-उन्नति कर रहे हैं, करते रहना और आगे उड़ते रहना।

03-02-2005

जो भी विशेषता है, सब प्रभु प्रसाद है

बापदादा को आज के दिन सच्चे भगत भी बहुत याद आ रहे हैं। वह व्रत रखते हैं एक दिन का और आपने व्रत रखा है सारे जीवन में सम्पूर्ण पवित्र बनने का। वह खाने का व्रत रखते हैं, आपने भी मन के भोजन व्यर्थ संकल्प, निगेटिव संकल्प, अपवित्र संकल्पों का व्रत रखा है। पक्का व्रत रखा है ना?

ब्राह्मण जीवन में जो भी प्राप्ति है, जो भी विशेषता है, सब प्रभु प्रसाद है, प्रभु देन है। तो दाता को भूल जाए, लेवता को याद करे ...। प्रसाद कभी किसका पर्सनल गाया नहीं जाता, प्रभु प्रसाद कहा जाता है, अच्छी बात है लेकिन सहयोग दिलाने वाला दाता तो नहीं भूले ना।

07-03-2005

शुद्ध भोजन, मन का शुद्ध संकल्प करते रहो

आजकल विश्व में दो बातें विशेष चलती हैं — एक एक्सरसाइज और दूसरा भोजन के ऊपर अटेन्शन। तो आप भी यह दोनों बातें करते हो? आपकी एक्सरसाइज कौन सी है? शारीरिक एक्सरसाइज तो सब करते हैं लेकिन मन

की एक्सरसाइज अभी-अभी ब्राह्मण, ब्राह्मण सो फरिश्ता और फरिश्ता सो देवता। यह मन्सा ड्रिल का अभ्यास सदा करते रहो। और शुद्ध भोजन, मन का शुद्ध संकल्प। अगर व्यर्थ संकल्प, निगेटिव संकल्प चलता है तो यह मन का अशुद्ध भोजन है। तो मन में सदा शुद्ध संकल्प रहे, दोनों करना आता है ना! जितना समय चाहो उतना समय शुद्ध संकल्प स्वरूप बन जाओ। 15-12-2005

कई भक्त भी सच्चे होते हैं

बापदादा देखते हैं भक्त भी जो सच्चे भक्त हैं, स्वार्थी भक्त नहीं, सच्चे भक्त, आज के दिन बड़े प्यार से व्रत रखते हैं। आप सबने भी व्रत तो लिया है, वह थोड़े दिनों का व्रत रखते हैं और आप सबने ऐसा व्रत रखा है जो अभी का यह एक व्रत 21 जन्म कायम रहता है। वह हर वर्ष मनाते हैं, व्रत रखते हैं, आप कल्प में एक बार व्रत लेते हो जो 21 जन्म न मन से व्रत रखना पड़ता, न तन से व्रत रखना पड़ता है। व्रत तो आप भी लेते हो, कौन सा व्रत लिया है? पवित्र वृत्ति, दृष्टि, कृति, पवित्र जीवन का व्रत लिया है। जीवन ही पवित्र बन गई। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत की नहीं, लेकिन जीवन में आहार, व्यवहार, संसार, संस्कार सब पवित्र। ऐसा व्रत लिया है ना? 25-02-2006

आप एक ही बार शुद्ध अन्न का व्रत लेते हो

मुख्य बात इस दिन भक्त लोग भी व्रत रखते हैं, वह व्रत खाने-पीने का रखते हैं, भावना में वृत्ति को श्रेष्ठ बनाने के लिए व्रत रखते हैं, उन्हीं को हर वर्ष रखना पड़ता और आपने क्या व्रत लिया? एक ही बार व्रत लेते हो, वर्ष-वर्ष व्रत लिया है, पक्का लिया है? जिन्होंने पक्का लिया है वह हाथ उठाओ, पक्का, थोड़ा भी कच्चा नहीं। पक्का? 15-02-2007

बापदादा का माताओं को वरदान है जहाँ मातायें सेवा करती हैं, वहाँ भण्डारा और भण्डारी भरपूर रहती

सेवा तो करती हो लेकिन अभी मातायें कोई अपनी नई चलन दिखाना और बापदादा का माताओं को वरदान है कि जहाँ सेन्टर पर मातायें ज्यादा होती हैं, सेन्टर पर सेवा करती हैं, वहाँ भण्डारा और भण्डारी दोनों बहुत भरपूर रहती हैं। चाहे कमाती नहीं हैं लेकिन दिल बड़ी है। तो माताओं की महिमा बापदादा भी करते हैं, आदि से शुरूआत से, जब सेवाकेन्द्र खुले तो जहाँ मातायें रही हैं वहाँ कभी भी न भण्डारा खाली रहा है, न भण्डारी खाली रही है। इसीलिए मातायें पालन करने वाली हैं ना! तो नई-नई आत्माओं की पालना बहुत अच्छी होती है।

31-10-2007

स्वमान को बुद्धि में इमर्ज रख खाना बनाओ

मातायें अपना आपेही प्रोग्राम बनाओ। अच्छा खाना बनाना है, उस समय कौन-सा स्वमान अपनी बुद्धि में इमर्ज रखना है। बहुत माला है स्वमान की। इतनी बड़ी माला है जो स्वमान गिनती करते जाओ और माला में समा जाओ। तो अभी बहुत काल का अभ्यास चाहिए।

लोग तो समझते हैं, एक ब्राह्मण को खिलाया, बहुत पुण्य जमा हुआ। लेकिन आप कितने ब्राह्मणों को खिलाते हो! कितना पुण्य और सभी सच्चे ब्राह्मण हैं। तो आप सभी ने सेवा का मेवा खाया? खाया? तो तन्दुरूस्त हो ना! मेवा खाने से तन्दुरूस्त बनते हैं। तो अच्छा है।

18-01-2010

सब सबजेक्ट में अनुभव की अर्थॉरिटी बनी

सबसे बड़े में बड़ी अर्थॉरिटी अनुभव गाया हुआ है। अनुभव को हज़ारों लोग बदलने चाहें, बदल नहीं सकते। जैसे आप सबने चीनी का अनुभव करके देखा है कि वह मीठी होती है, अगर हज़ारों लोग आपको बदलने चाहें, बदल सकते

हो? तो जो भी सब्जेक्ट हैं, चाहे ज्ञान की, चाहे योग की, चाहे धारणा की, चाहे सेवा की, किसी में भी चार में से एक में भी मेहनत लगती है तो जरूर अनुभव की कमी है। सेवा की सफलता में, धारणा में स्वभाव-संस्कार परिवर्तन की, योग में भी अचल रहने की, योगी जीवन की अनुभूति करने की जहाँ मेहनत है या कभी-कभी कहते हो, तो इसका अर्थ है उस सब्जेक्ट में आप अनुभूवीमूर्त नहीं बने हो। अनुभव कभी-कभी नहीं होता, नेचुरल नेचर होती है।
30-01-2010

बापदादा मददगार है

मोहिनी बहन से : प्यार से आगे बढ़ती रहती हो। (बीच-बीच में तबियत बिगड़ जाती है) वह गलती से होता है। अपने कुछ टाइम का नीचे-ऊपर हो जाता है, बाकी बापदादा मददगार है। जो हो चुका है उसको थोड़ा सुधरने में टाइम लगता है, पुराना शरीर है। हो जायेंगी। सिर्फ दिनचर्या और दवाई एक्क्यूरेट टाइम पर कराते रहो क्योंकि अभी कुछ समय आपको दवाइयों का आधार लेना पड़ेगा, हो जायेगा। (बापदादा ने सिर पर हाथ रखा) सभी के सिर पर हाथ है, यह तो एक के ऊपर रखा, लेकिन आप सभी के सिर के ऊपर बाप का हाथ है।
28-02-2010

कुम्भ के मेले से तो अच्छा है शुद्ध खाना मिलता है

बापदादा ने एक बात देखी कि सभी को कम संख्या में आने के बजाए बड़ी संख्या में आना पसन्द आ गया है। दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। फिर भी कुम्भ के मेले से शुद्ध खाना तो मिलता है। रहने के लिए चलो टेन्ट भी तो मिलता है। लेकिन जो भी आते हैं बापदादा उन्हीं का प्यार देख करके, क्योंकि प्यार में कुछ भी देखना पड़ता या करना पड़ता, तो वह पता नहीं पड़ता है, कर रहे हैं, खुशी-खुशी से करते हैं।
15-03-2010

जैसे आपकी पूजा कायदे प्रमाण होती है ऐसे किसी की नहीं

अभी समय अनुसार आप सभी पूर्वज आत्माओं को मंसा द्वारा शक्तियों की पालना करनी है। उन्हों को आवश्यकता है। तो जितना आप अपने पूर्वज के नशे में रहेंगे उतना ही आप द्वारा उन्हों की पालना होगी। वैसे भी देखो किसी की भी पालना लौकिक में भी बड़ों से होती है। वही उन्हों के शरीर के खाने-पीने, पढ़ाई जो सोर्स आफ इनकम है, उनका प्रबन्ध करते हैं। तो जैसे बाप ने आप सभी बच्चों की भिन्न-भिन्न शक्तियों से पालना की है वैसे अभी आपका कार्य है सारे वृक्ष के टाल-टालियों और पत्तों की पालना करना। ऐसा उमंग आप पूर्वज आत्माओं को आता है? नशा है? पूज्य भी हो। देखो, सारे ड्रामा में जितनी आप आत्माओं की कायदे प्रमाण पूजा होती है उतनी पूजा कोई भी महात्मा, धर्म पिता की नहीं होती। आपकी पूजा नियम प्रमाण आरती होना, भोग लगाना, ऐसी किसकी भी नहीं होती। गायन देखो, आपका कायदे प्रमाण कीर्तन होता है। किसी का भी ऐसे गायन नहीं होता। तो आप पूर्वज के साथ पूज्य भी हो। ड्रामा में आप जैसा पूजन और गायन किसी का भी नहीं है। 31-03-2010

जैसे तन के भोजन के लिए दृढ़ संकल्प लिया है ऐसे मन के भोजन के लिए संकल्प लो

जैसे ब्राह्मण बनने के साथ-साथ यह प्रतिज्ञा की कि कोई भी अशुद्ध भोजन स्वीकार नहीं करना है। तो बापदादा ने देखा इसमें दृढ़ संकल्प द्वारा मैजारिटी पास हैं। जैसे तन के लिए अशुद्ध भोजन का संकल्प किया और प्रैक्टिकल कर रहे हो, ऐसे ही मन के लिए यह दृढ़ संकल्प करना है कि कभी भी किसी के प्रति भी किसी भी सरकमस्टांश प्रमाण कोई भी व्यर्थ संकल्प न कर सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखनी ही है। मन का भोजन है संकल्प, तो जैसे तन के लिए दृढ़ संकल्प मैजारिटी ने किया है, ऐसे ही क्या मन

के लिए व्यर्थ संकल्प, अशुद्ध भावना मिटा नहीं सकते? हर आत्मा के प्रति दिल का स्नेह और सहयोग अपने मन में नहीं रख सकते हैं? 31-12-2011

ब्रह्मा भोजन प्रति, अव्यक्त बापदादा का अव्यक्त संदेश मरजीवा भोग लगाना अर्थात् नष्टोमोहा बनना

बाबा ने कहा – यह जो जीते-जी मरने आदि का भोग लगाते हैं, संकल्प तो बहुत अच्छा करते हैं लेकिन ऐसा समझ कर नहीं लगाओ कि पिछाड़ी में कोई लगाने वाला हो या न हो, इसलिए लगा रहे हैं। लेकिन जो भोग लगाये वह समझे कि मैं मर गई अर्थात् नष्टोमोहा: हो गई, फिर किसी में मोह न रहे। ऐसे कहते बाबा ने सभी को याद-प्यार दी और कहा – बाबा भी खुश, बच्चे भी खुशनसीब। सदा खुशी में नाचते-नाचते एक-दो को सहयोग देते आगे बढ़ते चलो। ऐसे कहते बाबा

12-04-1990 अ. संदेश

जो प्यार से ब्रह्मा भोजन खाके जाता है वो दुआयें देता है

और कोई विशेष पुरुषार्थ करने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। बस, दुआयें लेते जाओ। सेवा में शुभ भावना रखी तो दुआयें दी। और जिनकी सेवा करते हैं, प्यार से भोजन भी बनाते हैं, खिलाते हैं। तो जो ब्रह्मा भोजन खाके जाता है वो दुआयें देता है। वह यहाँ के भोजन की कितनी महिमा करता है, कैसा भी खाना खाने की आदत हो लेकिन यही सोचते हैं कि यहाँ बिना प्याज के, बिना इसके.. कैसे इतना टेस्टी भोजन बनाते हैं ... तो इन्डायरेक्ट सेवाधारियों के खाते में दुआयें जमा होती रहती हैं।

01-06-2003 अ. संदेश

बनाने वालों के प्यार की खुशबू बाबा के पास पहुंचती है

बहुत मीठी दृष्टि देते बाबा ने अपने पास बिठा लिया और कहा बच्ची आज तो तुम भोग लेकर आई हो, यह भोग मैं किसको खिलाऊँ? मैंने कहा बाबा हमने

तो यह भोग आपके लिए लाया है, सभी ने बड़े प्यार से भोग बनाया है। बाबा ने कहा वह तो बनाने वालों के प्यार की खुशबू आ रही है। फिर बाबा ने कहा जितनी भी चीजें हैं वह सब एक-एक चीज जिन्होंने बनाई है वह सब अपने हाथ से खिलायें। तो जो भी भोग बनाने वाली बहनें थी वह सब वहाँ इमर्ज हो गईं और उन्होंने एक-एक चीज अपने हाथ में उठाई और बाबा को खिलाई। बाबा ने फिर सभी को अपने हाथ से खिलाया। हमें भी बाबा ने भोग खिलाया और कहा बच्चों को कहना कि सदा अपने को सन्तुष्टमणियाँ समझकर बाबा के दिल की डिब्बी में रहना। सदा सन्तुष्ट रहने वाले, सर्व को सन्तुष्ट करने वाले और विश्व की सर्व आत्माओं को सन्तुष्टता की अंचली देने वाले बच्चे हो, यह महावाक्य बाबा ने उच्चारण किये, भोग खाया और हमें वापस साकार वतन में भेज दिया।
08-06-2003 अ. संदेश

अभी बाबा के साथ ही खाती हूँ

मैंने कहा बाबा आज तो रोजी बहन के लिए, आपके लिए बहुत अच्छा-अच्छा भोग बनाया है। भोग तो सामने रखा था। तो बाबा ने अमृतवेले भोग की थाली इमर्ज की और कहा बच्ची आज स्पेशल तुम्हारे लिए भोग आया है। तो रोजी बहन कहने लगी, मुझ पता हे क्या भोग आया होगा। जैसे हुज्जत से बाबा से इजी होकर कहते हैं ना। कहा, मेरे को जो प्यारा लगता है ना, मैं ऑर्डर देती हूँ ये बनाओ, वो ही बना होगा। हमको तो नाम ही नहीं आता कहने में। तो कहने लगी गुलजार बहन वो ही बना है ना। (भोग में बेसीबेडा भात था) बाबा ने कहा इसको खिलाओ, तो कहने लगी मैं आपसे थोड़े ही खाऊंगी, मैं तो अभी बाबा के साथ ही खाती हूँ, बाबा के साथ ही सोती हूँ। तुमको क्या पता ... मैं क्या-क्या करती हूँ। फिर बाबा ने उसको भोग खिलाया। फिर उसने हमको और हमने भी उसको खिलाया।
25-04-2004 अ. संदेश

36 प्रकार के भोजन के साथ 36 गुण जीवन में हो

बाबा ने कहा अच्छा, आज तो मधुबन से आप के लिये 36 प्रकार का भोजन आया है। तो मम्मा ने कहा यह 36 प्रकार देख करके यही याद आता है कि यह 36 गुण ऐसे ही सबके जीवन में समा जायें जो सभी देवियां और देवता बन जायें। फिर बाबा ने कहा मम्मा, अभी भोग तो स्वीकार करो। तो मम्मा ने कवर हटाया और सबके ऊपर दृष्टि दी। मम्मा ने कहा यह 36 प्रकार का भोग तो बहुत सुन्दर है, तो बाबा ने मम्मा को कहा मम्मा, आज तुम दादियों को खिलाओ। तो हम लोगों ने कहा बाबा पहले आप मम्मा को खिलाओ। तो बाबा ने मम्मा को गिट्टी खिलाई। मम्मा ने सभी को अपने हाथ से गिट्टी खिलाई और एक गिट्टी लेके ऐसे वर्ल्ड के गोले पर घुमाई जैसे मम्मा सभी बच्चों को खिला रही हो।

24-06-2004 अ. संदेश

जिस वृक्ष पर हाथ लगाओ वह रस वाला फल हाजिर है

बापदादा एक बगीचे में हमें ले चले, वहाँ जाते बाबा बोले, देखो ऐसा बगीचा तो आपके स्वर्ग में भी नहीं होगा। जिस वृक्ष पर हाथ लगाओ वहाँ ऐसे रस वाला फल है जो लो और पी लो, जैसी टेस्ट का फल चाहिए वह हाजिर है। इतने में बाबा ने ताली बजाई, मैं देख रही थी बाबा ताली क्यों बजा रहे हैं। तो क्या देखा, हमारी दोनों दादियां आपस में हाथ मिलाते, हाथ नचाते-नचाते पहुंच गईं और बाबा की दोनों बांहों में समा गईं। उसके बाद बाबा ने फिर और ताली बजाई तो क्या देखा, सारा मीटिंग का ग्रुप पहुंच गया। फिर तो क्या रौनक थी, सब बगीचे की हरियाली में चमकते सफेद-सफेद फरिश्ते छा गये, दृश्य बहुत सुन्दर था। आज बापदादा पिकनिक करा रहा है। ऐसा दृश्य था जो हमने भी पहली बार देखा।

04-04-2005 अ. संदेश

बाबा ने कहा आपस में एक दो, भोग बांट कर खाओ

बाबा ने कहा अब एक दो को भोग खिलाओ फिर सभी ने एक दो को खिलाया। फिर मम्मा और दीदी ने कहा कि बाबा आज तो आपसे भी भोग खायेंगे। तो फिर बाबा ने एक एक को गोदी में लेकर भोग खिलाया। तो आज सबने दो बार भोग खाया फिर बाबा ने कहा अच्छा अब सभी मिलकर डांस करो। तो सबने बहुत अच्छी डांस की। बाबा बीच में खड़ा था और सबको दृष्टि दे रहा था। 24-06-2005 अ. संदेश

बाबा ने कहा अभी जो चाहिए वह खाओ

सबको दृष्टि देते बाबा बोले – अच्छा, अभी चलो और सैर कराता हूँ। इतने में बाबा और सभी बच्चे पहाड़ी के नीचे आये जहाँ एक बहुत सुन्दर बगीचा था, उसमें बहुत प्रकार के वृक्ष थे। वृक्षों में भिन्न-भिन्न प्रकार के फल लगे हुए थे। बाबा ने कहा अभी जो चाहिए वह खाओ। फलों का रस किसी का मीठा, किसी का खट्टा, किसी का नमकीन ... सब बहुत मजे से ग्रुप-ग्रुप बना करके कोई किसी फल को, कोई किसी फल को खा रहे थे। फिर यह सीन पूरी हुई और शुरू में जैसे आधा चन्द्रमा के मुआफिक सर्किल में खड़े थे, उसी रूप में सब खड़े हो गये। 02-07-2005 अ. संदेश

बाबा ने कहा मैंने बच्ची को स्वीट मिश्री खिला दी है, इलायची की खुशबू भर दी है

हमने बाबा को भोग दिखाया और कहा बाबा आज सबने दादी के लिए तिलक, मिश्री सब भेजी है। तो बाबा ने कहा मैंने बच्ची को स्वीट मिश्री खिला दी है, इलायची की खुशबू भर दी है और बच्ची को स्वमानधारी बनाए स्वमान में स्थित करने का तिलक लगा दिया है, ऐसे करके दादी को एकदम सजा दिया है। फिर जो भी चारों तरफ के वतन में थे सब डीप साइलेन्स में ऐसे बैठ गये एकदम जैसे आशरीरी स्थिति में निराकारी स्वरूप में स्थित थे और दादी तख्त पर ही बैठी थी लेकिन उठके बाबा के सामने आई, बाबा ने ऐसे कहा बड़ा भाई है, इसलिए खड़े-खड़े गले लगेंगे।

06-09-2007 अ. संदेश

बाबा ने भी दादी को भोग खिलाया

मैंने कहा बाबा आज दादी को पूरा एक मास हो गया है। आज मैं आपके लिए और दादी के लिए विशेष भोग लेकर आई हूँ। फिर मैंने दोनों के सामने भोग रखा। तो दादी ने सबको इमर्ज किया और कहा अभी मैं अपने हाथ से सभी को भोग खिलाऊंगी। फिर दादी ने सभी को अपने हाथ से गिटी खिलाई। सभी मधुबन वालों को भी इमर्ज करके कहा सभी मुंह खोलो ... मुंह खोलो ... ऐसे कहते सबको अपने हाथ से भोग खिलाया। फिर बाबा को और दादी को भोग स्वीकार कराया। दादी कहती है मैं पहले बाबा को खिलाऊंगी, तो दादी ने भोग से गिट्टी बनाई और पहले बाबा को खिलाई और बाबा ने भी दादी को खिलाई। फिर बाबा और दादी दोनों ने मिलकर मुझे खिलाया। फिर बाबा ने कहा बच्ची अभी सभी को यही कहना दादी से प्यार है, बाबा से प्यार है। दोनों से प्यार है। दादी से प्यार माना दादी की सम्पन्न स्थिति से प्यार। दादी कहो और दादी की सम्पन्न स्टेज को याद करो।

27-09-2007 अ. संदेश

सूक्ष्म वतन का फल खाओ

बाबा ने कहा, अच्छा बच्चे, बगीचे के फल खा लो। तो सभी फल तोड़कर ले आये, बाबा ने सबको बगीचे में बिठा दिया और पूछा कि आप सबने सूक्ष्मवतन का फल खाकर देखा है! वह फल इतने नर्म थे जो आपको काटने की जरूरत नहीं, तो सभी ने बहुत प्यार से फल खाये। फिर बाबा ने सबको बगीचे में बिठा दिया।

13-07-2009 अ. संदेश

पहले बाबा को खिलाया फिर सबको खिलाया

देखो, आज मधुबन से आप सबके लिए कितना वैरायटी भोग आया है। बाबा उन सबके आगे भोग की डिब्बियां खोलता गया और कहा, देखो तुम्हारे लिए क्या-क्या बनाया है! बाबा ने पहले उनमें से 4-6 चीजें दादी को खिलाई फिर दादी को काम दिया कि आप सबको खिलाओ। तो दादी ने पहले बाबा को खिलाया फिर सबको खिलाया।

25-08-2009 अ. संदेश